महिला सशक्तिकरण : सामाजिक-आर्थिक स्थिति का वैदिक काल में परीक्षण

डॉ0 शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी

महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत महिलाओं से जुड़े सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और कानूनी मुद्दों पर संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है।[1] इसे सीधे-सीधे महिलाओं के सामाजिक समता, स्वतंत्रता और न्याय के राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति से जोड़कर देखा जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि महिलाओं को पुरूषों के समान राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक क्षेत्रों में आवश्यकतानुसार निर्णय लेने की स्वतंत्रता।

यद्यपि उपरोक्त में से अधिकांश आधुनिक अवधारणायें है तथा उनकी पहल सर्वप्रथम 1985 में नैरोबी में आयोजित 'महिला अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन' से मानी जाती हैं, जिसके पश्चात् भारत समेत अन्य देशों ने इस हेतु कार्य किया है लेकिन हमारे देश के वैदिककालीन युग में इन अवधारणाओं का परीक्षण करना काफी रोचक होगा।

वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों, वेदांगों और सूत्र साहित्य के आधार पर निरूपित संस्कृति को वैदिक संस्कृति को कहा जाता है ऋग्वैदिक कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यन्त विशिष्ट थी। उसके अधिकार, मान-सम्मान पुरूषों के कम नहीं थे। हालांकि उस यायावरी तथा सामाजिक वातारण में पुत्र के जन्म की कामना स्वाभाविक था परन्तु हमें पुत्री के जन्म पर दु:खी होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता ।[2] जन्म के पश्चात उसका लालन-पालन उत्तम प्रकार से होता था । माता-पिता कोई भेदभाव नहीं करते थे। बालकों के समान बालिकाओं का भी यज्ञोपवीत संस्कार होता था और वो भी ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करती हुई, शिक्षा प्राप्त किया करती थी। एक मंत्र के अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने के पश्चात् ही कन्या युवा पति को प्राप्त करती थीं।[3] आश्वलायन श्रौत-सूत्र में बालक और बालिका दोनों के लिए ही ब्रह्मचर्य को समान बताया गया है। गोभिल गृह्य-सूत्र में विवाह के समय, वर को दी जा रही कन्या हेतु यज्ञोपवीतनीम (यज्ञोपवीत धारण युक्त) शब्द का प्रयोग भी उपरोक्त तथ्य को और अधिक स्पष्ट करता है।.[4]

बालिकाओं को बालकों के समान शिक्षा प्राप्ति के अधिकारों के अनेक महत्वपूर्ण परिणाम निकले। इससे उन्हे अनेक अधिकार मिले तथा परिवार व समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी। बहुत सारी स्त्रियाँ ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं की रचनाकार हैं। जिसमें लोमशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, सिकता, यमी,शची, श्रद्धा, ब्रह्मवादिनी जुहू, वाकृ सूर्या, इन्द्राणी, घोषा, अर्चनाना, गौरवीति, अपाला, असंगभार्या, शाश्वती आदि उल्लेखनीय है।[5] यह स्त्रियों हेतु अत्यन्त सम्मानजनक था। वैदिक ऋषियों में शामिल होना उनके लिए प्रतिष्ठापूर्ण था। लोग ऐसी पुत्रियों की कामना करते थे। ऐसे धार्मिक कृत्यों का उल्लेख मिलता है, जिनका उद्देश्य विदुषी पुत्री प्राप्त करना था.[6] ब्रह्मयज्ञ में जिन ऋषियों की गणना की जाती है, उनमें सुलभा, गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषियों के नाम भी लिए जाते हैं, जिनकी प्रतिष्ठा वैदिक ऋषियों के ही समान थी। विदेह शासक जनक ने यज्ञ के अवसर पर जो धार्मिक शास्त्रार्थ आयोजित किया था, उसमें गार्गी ने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा से याज्ञवल्क्य को निरूतर कर दिया था। इससे स्पष्ट होता है कि स्त्रियाँ बिना पर्दे के स्वतन्त्रतापूर्वक गोष्ठियों, समाजों, उत्सवों आदि में भाग लेती थीं।[7]

शिक्षा के अधिकार ने स्त्रियों की स्थिति मजबूत की। उन्हे विवाह सम्बन्धित अनेक अधिकार प्राप्त थे। ऋग्वेद में ऐसे अनेक उल्लेख हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि कन्याओं का विवाह बड़ी आयु में होता था।.[8] इस प्रकार उन्हें अपने विकास हेतु उचित अवसर प्राप्त हो जाता था। ऋग्वेद कालीन विवाहों के अनेक प्रसंगों से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि विवाह के समय न केवल उसकी इच्छाओं का ध्यान रखा जाता था अपितु पति चुनने हेतु उनकी स्वतन्त्रता भी थी।[9] यदि स्त्री चाहती तो वो आजीवन अविवाहित रहकर अपनी शिक्षा जारी रख सकती थी।

वैदिक युग में छात्राओं के दो वर्ग थे-एक सद्योवधू और दूसरा ब्रह्मवादिनी। सद्योवधू वर्ग की छात्रायें विवाह के पूर्व तक शिक्षा प्राप्त करती थीं और ब्रह्मवादिनी वर्ग की छात्रायें जीवनभर अध्ययनरत रहती थीं। इनमें से अधिकांश अविवाहित रहती थी। ऋषि कुशध्वज की कन्या वेदवती ऐसी ही ब्रह्मवादिनी स्त्री थी।[10] विवाह के पश्चात् पत्नी की परिवार में अत्यधिक प्रतिष्ठा थी।[11] पति के साथ समान रूप से वे यज्ञ में सहयोग करती थीं।[12] पत्नी और पति हेतु दंपत्ति शब्द आया है, जिससे स्पष्ट है कि दोनों ही समान रूप से घर के स्वामी माने जाते थे । परिवार के सभी कार्यों की देखभाल पत्नी स्वयं करती थी।[13] घर के नौकरों और दासों पर उसका पूर्ण अधिकार था।[14] वृद्ध सास-ससूर, ननद, देवर आदि सभी का वो ध्यान रखती । सभी उसका तथा उसके अधिकारों का सम्मान करते थे। ऋग्वेद के एक सूक्त में पौलोमी शची द्वारा अपने मनोभावों को व्यक्त करते कहा गया है कि ''मैं ज्ञानवती हूँ। मैं मूर्धन्य हूँ। मैं तेजस्वी वक्ता

हूँ। मैं शत्रु का विनाश करने वाली हूँ। पति मेरे अनुकुल रह कर व्यवहार करें। मेरे पुत्र शत्रुओं का विनाश करने वाले हैं। मेरी पुत्री तेजस्विनी है। मैं सर्वत्र विजयी हूँ। मेरी प्रशंसा पति के विषय में हैं या मैं सदा अपने पति की प्रशंसा करती हूँ।[15]

उपरोक्त शब्द न केवल बहुत सारी बातें स्वयं कह देते हैं बल्कि वर्तमान के लिए भी आदर्श हैं। वैदिक काल में पति और पत्नी, दोनों को ही परिवार की सम्पत्ति का संयुक्त स्वामी समझा जाता था। पति को विवाह के समय यह प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी वह पत्नी के आर्थिक अधिकारों की अवहेलना नहीं करेगा।

आपस्तंब के अनुसार परिवार की संपत्ति के संयुक्त स्वामित्व का अर्थ यह है कि पति की अनुपस्थिति में पत्नी परिवार के लिए आवश्यक व्यय कर सकती है।[16] संपत्ति में प्रायः बालिकाओं का हिस्सा रहता था। परिवार में वह पुत्र से किसी प्रकार कम नहीं समझी जाती थी।[17] पुत्री, दत्तक पुत्र से श्रेष्ठ समझी जाती थी।[18] पुत्र के नहीं रहने पर पुत्री, पिता की संपत्ति की उत्तराधिकारी मानी जाती थी।[19] इस प्रकार वैदिक काल में स्त्री के संपत्ति सम्बन्धी अधिकारों के कुछ प्रसंगों से यह भी ज्ञात होता है कि निश्चित ही पुत्र के रहते हुए कन्या का संपत्ति में अधिकार वैदिक काल से ही रहा है। ऋग्वेद के एक मंत्र में यह प्रार्थना की गयी है कि– ''हे इन्द्र! मैं आपसे उसी प्रकार धन की याचना करती हूँ जैसे कि माता–पिता के साथ रहने वाली (पितृगृह में ही) बूढ़ी हो जाने वाली कन्या, घर से अपना हिस्सा मांगती हैं।[20] कभी–कभी स्त्रियाँ अपने संपत्ति विषयक अधिकारों के लिए न्यायालय में भी जाती थी।[21]

वैदिक युग में स्त्रियाँ परदा नहीं करती थीं। वो उन्मुक्त होकर परिवार, उत्सवों, समाजों में विचरण करते, वार्ता करती तथा अपने विचार रखती थीं। उस समय की महत्वपूर्ण संस्थाओं सभा, समिति, विदथ में भी स्त्रियाँ स्वच्छन्दता पूर्वक सम्मिलित होती थीं।[22] स्त्री के लिए सभावती शब्द का प्रयोग मिलता है।

इस प्रकार वैदिक युग में विशेषकर ऋग्वैदिक काल में स्त्री जितनी स्वतन्त्र तथा मुक्त थीं, उतना परवर्ती काल के किसी भी युग में नहीं रहीं। वो विस्तृत अधिकारों का उपभोग करती थीं। उत्तरवैदिकोल के परवर्ती युग से ही नारी की स्थिति में गिरावट आनी प्रारम्भ हो गई। उसके शिक्षा, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अधिकारों में कटौती प्रारम्भ हो गई। उसको संदेह की दृष्टि से देखते उसे असत्सभाषी कहा गया।[23] उसे पुरूषों के साथ यज्ञ में सोम का भाग लेने से वंचित कर उसकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया गया।[24] शतपथ ब्राह्मण में भी पत्नी को दाय से वंचित किया गया।[25] इस प्रकार अब स्त्रियों पर अनेक सामाजिक एवं धार्मिक नियंत्रण लगाये जाने लगे, जो आगे चलकर और विस्तृत हो गये।

सन्दर्भ

1. महिला सशक्तिकरण, विकिपीडिया।
2. ओम प्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 220
3. अथर्ववेद, 11.05.18
4. विद्यालंकार, सत्यकेतु, प्राचीन भारतीय का वैदिक युग, पृ0 215
5. ऋग्वेद, 1.17, 5.28, 8.91, 9.81 और 1.39.40
6. वृहदारण्यक उपनिषद, 4.4.18.
7. वही, 3–6
8. ऋग्वेद, 1.115.2, 1.117.7,1.123.11, 1.197.3
9. वही, 10.27.12.
10 मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ 416
11. ऋग्वेद, 1.66.3, 1.124.4, 3.53.4, अथर्ववेद, 14.2.43
12. वही, 8.31
13. वही, 1.85.46, अर्थवेद, 14.1.43
14. काठक संहिता, 31.1
15. ऋग्वेद, 10.159.2.3
16. ओम प्रकाश, पूर्वोक्त, पृ0244
17. बौधायन धर्म सूत्र, 17.15
18. ऋग्वेद, 7.4.8
19. वही, 1.124.7
20. वही, 2.17.7
21. अथर्ववेद, 14.1.21
22. ऋग्वेद 10.85.33
23. मैत्रायणी संहिता, 3.6.3, शतपथ ब्राह्मण, 14.1.1.31
24. तैत्तिरीय संहिता, 6.5.8.2
25. शतपथ ब्राह्मण, 4.4.2.13

''महाविद्यालयों में छात्र–असंतोष का एक अध्ययन''

प्रेम प्रकाश पाण्डेय
असि.प्रो.बी.एड.

छात्र असंतोष आज सम्पूर्ण शैक्षिक जगत के लिए एक विचारणीय तथ्य हो गया है। न केवल शैक्षिक प्रक्रिया में सम्निहित व्यक्तियों वरन् प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का ध्यान इसने अपनी ओर आकृष्ट किया है। यह समस्या आज न केवल भरत वरन् सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। छात्र असंतोष के कारण आज शिक्षण संस्थाओं में उचित शैक्षिक वातावरण का अभाव दृष्टिगोचर होता है।

प्रायः लोग छात्र–असंतोष और छात्र अनुशासन हीनता को एक ही अर्थ में लेते है। परन्तु इन दोनों में बड़ा अन्तर है। संसार का इतिहास यह वताता है कि किसी भी समय किसी भी देश में जो भी सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन हुए है वह युवा शक्ति के द्वारा हुए है। जब युवक अपनी वर्तमान सामाजिक अथवा राजनैतिक व्यवस्थाओं से संतुष्ट नही होते तो उनके मन में उनके विरूद्ध बेचैनी उत्पन्न होती है। यह क्रम निरन्तर चला आ रहा है। महाविद्यालय स्तर के छात्र युवावस्था के होते है, उनके मन में सामाजिक और राजनैतिक कुव्यवस्थाओं के प्रति कहीं न कहीं आक्रोश छिपा रहता है और यदि वे शिक्षा संस्थाओं में भी कुव्यवस्था देखते है तो उनके मन में इसके प्रति भी आक्रोश पैदा हो जाता है।

स्पष्ट है कि अनुशासनहीनता और शिक्षा संस्थाओं की कमियों के प्रति सचेत होना छात्र आक्रोश/ छात्र असंतोष लाभकारी परिवर्तन चाहता है और छात्र अनुशासनहीनता अराजकता फैलाती है अलाभकारी स्थिति पैदा करती है।

कभी–कभी छात्र असंतोष अनुशासनहीनता में परिवर्तित हो जाता है तो हानिकारक स्थिति पैदा हो जाती है। आज हम देख रहे है कि युवा छात्र वर्तमान उच्च शिक्षा व्यवस्था से संतुष्ठ नही है, उनमें उसके प्रति आक्रोश है।

राजनैतिक छात्र नेता इसका लाभ उठाते है उन्हे आन्दोलनों एवं तोड़–फोड़ की ओर मोड़ देते है। इस क्रिया में समूह मनोविज्ञान काम करता है और अनुशासित छात्र भी उसमें सम्मिलित हो जाते है, यही कारण है कि सामान्य व्यक्ति आज असंतोष और अनुशासनहीनता को एक ही मानता है।

आज युवा आक्रोश पूरे विश्व की समस्या है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपने वर्तमान से संतुष्ट नहीं होता और जब युवा असंतुष्ट होता है तो परिवर्तन होते है। परन्तु कभी परिवर्तन विकास की ओर ले जाता है कभी पतन की ओर इसलिए युवा शक्ति को सही मार्ग पर लगाने की आवयश्कता है।

हमारे देश में उच्च शिक्षा की व्यवरूथा में जो दोष है उसके लिए महाविद्यालयी स्तर के छात्रों में असंतोष है और यह असंतोष प्रायः आन्दोलनो और तोड़ फोड़ में बदल जाता है जो अनुशासनहीनता का एक रूप है और यह व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए अहितकर है। यदि समय रहते समस्या के कराणों को खोजकर उसका उचित समाधन न किया गया तो राष्ट्र को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। असंतोष का होना बुरा नहीं होता है यह सजगता का लक्षण है यदि असंतोष की ऊर्जा को सृजनात्मक दिशा में लगा दिया जाये तो बेहतर परिवर्तन की सम्भावना है। इसलिए छात्र असंतोष का शमन करने के बजाय उसको संवार कर शिक्षा जगत में उचित बदलाव लाया जा सकता है।

आज के छात्र प्रत्येक समस्या पर अपने ढ़ग से सोचते है और निर्णय करते है वे अपने को प्रौढ़ो के रूप में प्रतिस्थापित करके यह चाहते है कि उनका प्रौढों की तरह ही समाज में अस्तित्व स्वीकार किया जाय। शैक्षिक संस्थाओं के नियंत्रणकर्ता प्रायः परम्परावादी और निक्रिय होने के कारण आधुनिकीकरण की माँगों को स्वीकार करने में उदासीन होते है इससे छात्र असंतोष पनपता है।

महाविद्यालय स्तर के छात्रों का अवस्था हस्तक्षेप को बहुत कम स्वीकार कर पाती है जबकि समाज का नियंत्रण इसी अवस्था हेतु सर्वाधिक बनाया गया है। आकांक्षा और उपलब्धि के मध्य बढ़ता अन्तराल ही असंतोष का प्रमुख कारण है।

अतः भूमण्डलीकरण के इस दौर में शिक्षा की चुनौतियाँ आज पूर्व की अपेक्षा अधिक है छात्र –असंतोष भी बढ़ा है इसलिए इसका समाधान किया जाना आज और भी आवश्यक हो गया है।

बच्चों का मन

अजरा इस्लाम
असि.प्रो. –बी.एड. विभाग

अरे ! आज तुम इसे साथ क्यू लाई, इसका स्कूल नहीं है क्या ?

मैंने आश्चर्य से अपनी कामवाली रमा से पूछा। मैडम दिवाली की छुट्टी अब होने वाली ही है दो–चार दिन पहले से ही छुट्टी दिलवा दें। वो क्या है ना अभी घरों में सफाई का काम चल रहा है तो इसे भी साथ ले आई सोचा दो–चार पैसे ज्यादा कमा ले। दिवाली है ना सिर पर । इसके और बिट्टी के लिये कपड़े और पटाखे खरीदने हैं। सास के लिये नई साड़ी लेनी है त्यौहार है ना कब से कह रही है एक साड़ी ला दो। मेरा तो कुछ नहीं कोई न कोई मेमसाब अपनी पुरानी साड़ी दे ही देगी। मैं एक टक उसे देखती रही। गलत तो वो भी नहीं थी पर इस तरह से छुट्टी दिलवाना मुझे बहुत अखर रहा था। वैसे भी वो लाजो को स्कूल कहां भेजना चाहती थी मेरे लाख समझाने पर और उसका स्कूल का खर्चा मेरे उठाने पर वो बड़ी मुश्किल से राजी हुई। इस पर भी वो हर बार त्यौहार पर उसे छुट्टी दिला ही देती कुछ पैसे इकट्ठे होने की चाहत में। मैं इसे चाहकर भी गलत नहीं ठहरा सकती थी क्योंकि उनकी भी अपनी चाहते, जरूरते होती है जिसे पूरा करने के लिये उन्हें ये मश्क्कत करनी ही पड़ती है। मैं ये सोच ही रही थी कि मेरी 10 साल की बेटी बोली, मम्मा क्या हम इन्हें कुछ पटाखे और कपड़े नहीं दे सकते? हमारे पास इतने तो पैसे है कि हम इनकी इनती सी मदद तो कर सकते हैं मैं उसकी बात से सहमत तो थी पर यूंही बोल पड़ी हम एक रमा के परिवार का करेंगे पर दुनिया में कितनी रमाए और है उनका क्या ? त्यौहार मनाने का हक तो सबको है ना? इसपर वो तपाक से बोली, मम्मा अगर एक जैसा सोचे और थोड़ा खर्चा यू किसी की मदद करने लगे तो क्या काफी हद तक किसी को खुशियां नहीं मिल सकती। ये गरीब है इसमें इनका क्या दोष? क्या इन्हे त्यौहार मनाने का, खुशिया समेंटने का हक नहीं है? अपनी छोटी सी बेटी के मन में इतनी दया भाव देख मैं सचमुच पुलकित हो उठी। और सही ही तो कह रही थी वो हम अपने बेहिसाब खर्चो में से गर कुछ खर्चा किसी जरूरत मंद को खुशिया देकर करे तो क्या हमारी दिवाली रंगीन नहीं होगी? शायद और ज्यादा रंगीन... क्योंकि उसमें किसी की दुआओं की रोशनी भी साथ होगी। भई मुझे तो मेरी बेटी का सुझाव पसंद आया और क्या आपको???

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

पूनम सिंह
प्रवक्ता, बी.टी.सी.

''गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मतलब ऐसी शिक्षा हैं जो हर बच्चे के काम आये। इसके साथ ही हर बच्चे की क्षमताओं के सम्पूर्ण विकास में समान रूप से उपयोगी हो''

हर बच्चे की लिए उपयोगी–ऐसी शिक्षा हर बच्चे के वैयक्तिक विभिन्नता का ध्यान रखने वाली होगी। हर बच्चे के सीखने का तरीक अलग–2 होता है। ऐसे में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हर बच्चे के सीखने के तरीके को अपने में समाहित करने वाली होगी ताकि कक्षा में कोई बच्चा सीखने के पर्याप्त अवसर से वंचित न रह जाये। इसके साथ ही बच्चे को विभिन्न गतिविधियो, खेल और प्रोजेक्ट वर्क के माध्यम से उनको सीखने का मौका देने वाली भी होगी।

ऐसी शिक्षा में चीजों को समझने, अर्थ निर्माण के ऊपर विशेष स्थान दिया जाता है। बच्चे को चर्चाओं के माध्यम से अपनी बात कहने और ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी का मौका मिलेगा । इस नजरिये से संचालित होने वाली कक्षाओ में गतिविधियो और विषयवस्तु में एक विविधिता होगी। शिक्षक के नजरिये में लचीलापन होगा। वे हर बच्चे को साथ–साथ सीखने के अतिरिक्त, खुदके प्रयास से भी सीखने का पर्याप्त मौका देगे ताकि बच्चो का आत्मविश्वास बढ़े।

जीवन कौशल का विकास करे – ऐसी शिक्षा में बच्चो के सामने समस्या समाधान की दिशा में सोचने वाली परिस्थितियां रखी जायेगी ताकि बच्चा ऐसे जीवन कौशल का विकास कर सके जो आने वाले भविष्य में उसके काम आ सके। इसके लिए कक्षा में एक ऐसा माहौल जरूरी होगा जहाँ उनकी रचनात्मकता अभिव्याक्ति के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो। विद्यालय में ऐसे माहौल के लिए समुदाय के साथ अच्छी सहभागिता की जरूरत होगी क्योंकि बगैर समुदाय सहयोग के सकारात्मक माहौल का निर्माण करना विद्यालय के लिए सम्भव नही । क्योकि विद्यालय भी समुदाय का एक हिस्सा है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में बच्चे को चुनाव का अवसर दिया जाता है। ऐसे माहौल में एक शिक्षक सुगमकर्ता के रूप में काम करता है। कक्षा के केन्द्र में बच्चा होता है।

सीखने का बेहतर माहौल – कक्षा में पढ़ाई का काम सुचारू ढ़ंग से होने के लिए बच्चो की बैठक व्यवस्था और कमरे में साफ– सफाई का होना भी जरूरी है। गंदे और आपाधापी वाले माहौल में किसी बच्चे के लिए अपनी पढ़ाई के ऊपर ध्यान केन्द्रित करना संभव नहीं रह जायेगा। ऐसे में जरूरी है, कि कक्षा में पढ़ने का काम सुचारू ढ़ंग से होने के लिए बुनियादी माहौल उपलब्ध हो।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक बहुआयामी संप्रत्यय है।

“भारतीय समाज और शिक्षा का योगदान”

शिवकेश द्विवेदी
प्रवक्ता

समाज, देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करने की परम्परा रही है और यह परम्परा भविष्य में भी बनी रहेगी, क्योंकि शिक्षा ही राष्ट्रीय मूल्य तथा आकांक्षाओं को सम्भव बनाने में सहायक सिद्ध होती है। श्रेष्ठ, सबल और योग्य नागरिकों का निर्माण शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है, तथा इस प्रकार के माध्यम से आदर्श समाज का निर्माण सम्भव है। अतः शिक्षा और समाज में अटूट सहसम्बंहा पूर्व में भी रहे है और भविष्य में ही वह बने रहेगे। समाज अपने आदर्शो आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भावी नागरिको के लिए शिक्षा की ऐसी व्यवस्था करता है कि वह समाज के आदर्शो को प्राप्त करते हुए समाज के लिए उपयोगी नागरिक के रूप में अपने आपको प्रस्तुत कर सके। जनतन्त्रीय भारत में शिक्षा के माध्यम से देशवासियों के व्यक्तित्व का सर्वागींण विकास करना ही प्रमुख लक्ष्य है। लोक तन्त्रीय भारत की जड़ें इसलिए कमजोर परिलक्षित होती है क्योंकि यहाँ शत प्रतिशत लोग शिक्षित नहीं हैं। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक शिक्षा का एक उद्देश्य रहा, सिर्फ समाज को जोडना। शिक्षण – संस्थानों व शिक्षा नियोजकों से आशा की जाती है कि वे केवल तथ्यों को रटने के बजाय वास्तविकताओं की शिक्षा व्यवस्था को प्राथमिकता दें। वास्ताविक मौलिक तथ्यों को खोजने की प्रेरणादायक शिक्षा अध्यापन विधि प्रदान करना आवश्यक है। इसको विश्व के विभिन्न शिक्षा दर्शनिकों से इसकी उपादेयता को सिद्ध किया है। जिससे स्वयं से सीखने का वातावरण बने और शिक्षा का प्रसार प्रचार हो।

प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक की अध्ययन संस्थाओं में जनतन्त्र आधारित, समाजवादी समाज, समान नागरिक सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक न्याय, धर्म निरपेक्षता एवं लोक कल्याणकारी राज्य के प्रतिमानो को दृष्टि में रखना परम आवश्यक है। ताकि बालकों में समानता का अधिकार स्वतः जन्म ले सके।

अतः शिक्षा के अंधकार से छुटकारा पाकर ही हम अपने कंलक को मिटा सकते है।

समय को धन से भी ज्यादा संभालो

विनीता सिंह
प्रवक्ता
शिक्षा शास्त्र विभाग

एक दिन साबरमती आश्रम के पास किसी गाँव के लोग महात्मा गाँधी के पास आए और कहने लगे कि बापू हमने गाँव में सभा का आयोजन किया है। आप समय निकाल कर आए और हमारा मार्गदर्शन करें, तो बड़ी कृपा होगी। गाँधी जी ने अगले दिन के लिए निर्धारित अपने कार्यक्रमों को देखा और पूछा, यह कार्यक्रम कितने बजे तय है?

एक कार्यकर्ता बोला, हमने 4 बजे का समय निश्चित किया है। गाँधी जी के कार्यक्रमों में अगले दिन 4बजे कोई व्यस्तता नहीं थी, सो उन्होने कार्यक्रम में आने की स्वीकृति दे दी।

कार्यकर्ता बोला ,बापू, कल मैं 1 घण्टे पहले गाड़ी भेज दूँगा, ताकि आपको आने में कष्ट न हो। गाँधी जी बोले ठीक है, मैं निश्चित समय पर तैयार रहूँगा। अगले दिन जब पौने चार बजे तक कोई नहीं पहँचा, तो गाँधी जी चिंतित हो गए, और सोचने लगे, यदि वह समय पर नहीं पहुँचा, लोग क्या कहेंगे? उनका समय व्यर्थ मे नष्ट होगा। गाँधी जी ने एक उपाय सोचा और उसपर अमल किया। कुछ समय बाद वह कार्यकर्ता गाड़ी लेकर गाँधी जी को लेने के लिए आश्रम पहुँचा, तो गाँधी जी को वहाँ नहीं पाया, उसे बहुत आर्श्चय हुआ, वह वापस लौट आया और जब वह सभा स्थल पर पहुँचा तो देखा कि गाँधी जी भाषण दे रहे थे। भाषण के बाद वह गाँधी जी से मिला और बोला, मैं आपको लेने आश्रम लेने गया था, परन्तु आप वहां नहीं मिले फिर आप यहां तक कैसे पहुँचे?

गाँधी जी ने कहा, जब आप पौने चार बजे तक नहीं पहुँचे, तो मुझे चिंता हुई कि मेरे कारण इतने लोगों का समय नष्ट हो सकता है इसलिए मैंने साइकिल उठाई और यहाँ पहुँच गया। गाँधी जी ने कहा, समय धन है, इसे व्यर्थ में मत गंवाओं।

लक्ष्यप्राप्तये आवश्यकर्मास्त, आम्मसंयमः

अनिल कुमार अवस्थी
प्रवक्ता –भाषा

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

तत्स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।।

श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

संसारेडस्मिन् ईश्वरेण सर्वोत्मम् कृतिरुपेण मानवो संरचितः। संसारस्य अस्तित्वं मानवो विहीनः न भवितुं शक्यते अथ च यदा मानवः संयतेन्द्रियः श्रद्धावान् च भवति तदा ज्ञानं लभते। अनेन स्वयमेंव प्रकाश्यते। स्वयमेव प्रकाशायितुं आत्मसंयमस्यावश्यकता भवति। अनेन मानवस्य विकासः भवति। तेन चरमोत्कर्षलक्ष्यं प्राप्तये समुधते। वयं चिन्तयामो यत् साधनाभावं साध्यस्य प्राप्तिः दुष्करं भवति। एतदर्थ आत्मसंयरूपी साधनेन साध्यरूपी लक्ष्यस्य प्राप्तिः संभवति। आत्मसंयमं नाम तु पश्चज्ञानेन्द्रियपश्चकर्मेन्द्रियाणास्च संयमं, एतान् इन्द्रियान् चालयितुं मनः उभयेन्द्रिभ एकादशोन्द्रिरुपेण वर्तते। मनसैव इन्द्रियेषु कर्त्तृत्वं समायाति। परञ्च मनसः स्थितिः सामान्यो न भवति तत् तु चञ्चलं भवति केवलं आत्मसंयमेनैव तस्य चञ्चलतायाः निवारणं भवति। श्रीमद्भगद्गीतायां मनः कीदृशं चञ्चलं भवति इत्यास्मिन् विषये अर्जुनः उक्तवान्–

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाणि बलवद्दृढम्।

तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।। 6/36

अवापि अर्जुनमपि आत्मसंयमस्य आवश्यकता आसीत्। कारणमिदं वर्तते यत् धर्मयुद्धं जेतुं समुद्यतं अर्जुननीत्वा यदा कृष्णः उभयोः सेनयोः मध्ये गतवान् तदा अर्जुनः विकलेन्द्रियः सञ्जातः। युद्धं न करिष्यामि इत्येवं उक्तवान्। तदा कृष्णः आत्मसंयमयोगस्य ज्ञानं दत्तवान् उक्तं यत् युद्धं कुरू क्षत्रियस्य कर्त्तव्योऽयं। अनेनैव संसारेऽस्मिन् मानवस्य कर्त्तत्यं भवति लक्ष्य प्राप्तिः। अस्मिन् आत्मसंयमे अहंकार चतुष्टयः सन्ति यथा–मन–बुद्धि–चित–अहङ्गारश्च। प्रत्येकस्य कार्य भवति यथा

मनः	बुद्धिः	चित्र	अहङ्कार

संकल्प–विकल्पात्मकश्च, निश्चयात्मिका, शारीरिक–क्रियात्मकता, प्रभावः एभि मानवो कार्यकरणार्थ प्रवृत्तो भवति। मनसि सदसद् विचाराः समायान्ति। तेषु विचारेषु यद् सद् विचाराः भवन्ति। ते विचाराः आत्मसंयमं विना अरूचिकराः भवन्ति मनः न गृह्चते। असद्विचारेषु अज्ञानाभिहिता सुन्दरता आनन्दश्च भवति तान् प्रति मनः झटित्येव सङ्कल्पं सुदृढं करोति। सुदृढान् संकल्पान् बुद्धिः निश्चयं करोति। अनेन बुदिः निश्चयात्मिका वर्तते। यद् बुद्धौ निश्चयं भवति तद् चित्तेसभायाति। अस्मात् अहङ्कारस्य अभ्युदशः भवति। अनेन चरमोत्कर्ष लक्ष्यस्य प्राप्तिः न भवति। अहङ्कार चतुष्टमेषु असद् अपकर्त्तुं आत्मसंयस्य आवश्यकता वर्तते। आत्मसंयमः योगेन समायाति। गीतायाम् उक्तं यत्–

सङ्कल्प प्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः।

मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः।।

श्रीमद्भगवद्गीता 6/24

असद् सङ्कल्पान् अपकर्त्तु योगः। अस्य अर्थः भवति 'अप्रात्यस्य प्राप्तिः योगः' अथ च 'योगश्चित्तवृत्ति निरोध+ योगः उभयोः संयोगः एवं वर्तते सत् अप्रात्यस्य प्राप्तये चित्तवृत्तीनां निरोधः अवश्यमेव करणीयः। अनेन सभत्वं समायाति। समत्वयोगेन कर्मसु कुशलता संप्रात्यते। गीतायां उक्तं यत्–

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृत दुष्कृते।

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।।

श्रीमद्भगवद्गीता 2/50

एतत्सर्व संयतेन्द्रियाभ्यासेन समागच्छति। अनेन प्रवृत्ति–निवृत्योश्च ज्ञानं भवति। गीतायां उक्तं यत्–

असंशयं महाबाहो मनोदुर्निग्रहं चलम्।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृहयते।।

श्रीमद्भगवद्गीता 6/35

अथ च योगगाभ्यासेन आत्मसंयमेन च मानव चरमोत्कर्षलक्ष्यस्य प्राप्तिः करोति। अधुना जनाः स्वार्थपरायणाः वर्तन्तें। सर्वत्र अमानवीय व्यवहारः दरीदृश्यते यथा–ईर्ष्या–द्वेष–घृणा–हिंसा–बलात्कारश्च।

लोक कल्याणं भवतु इति उतरदृशी संङ्कल्पनाया दृश्ते। 'मनुर्भव' एतादृशी संकल्पना नास्ति इदानीम्। न्यूनता लोभ पाशेन मानवं अन्धस्मृतिपिभ्रमश्च सञ्जाता अपि च सन्तुलनसमायोजनयोश्च न्यूनता वर्तते। किमाधिं कथयामो यत् सर्वाधिकाः मानवाः अनैतिक कार्येपु संलग्नाः वर्तन्ते। दुःखमनूभवामो यत् केन प्रकारेण परिवर्तनं सम्भात्यते। शिक्षकोडस्मि एतदर्थ अस्माकं चिन्तनंम् इत्थं वर्तते यत् छात्र–शिक्षकयोश्च मध्ये अस्माकं चिन्तनंम् इत्थं वर्तते यत् छात्र–शिक्षकयोश्चमध्ये यदि योगाभ्यास पूर्वकं आत्मसंयमः संस्थाप्यते चेत् निश्चितमेव परिवर्तनं भविष्यति। शिक्षकः ज्ञानस्य प्रतिमूर्तिः भवतिअथ च द्वितीसः सृरूिटकर्त्ता। अनेन आत्मसंयमेन संकल्प साधनेन च नैतिकतायाः

समावेशेन लक्ष्यस्य प्राप्तिः सम्भात्यते।

'तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु'

शिवसूक्त यजुर्वेद

जीवित रखें पढ़ने का अभ्यास

वैशाली वर्मा
प्रवक्ता

हर व्यक्ति बचपन से ही पढ़ना–लिखना प्रारम्भ करता है और यह तब तक जारी रहता है जब तक कि उसकी शैक्षिक जिम्मेदारियाँ पूर्ण नहीं हो जाती है, लेकिन जैसे ही पढाई पूरी होती है, नौकरी मिलती है, तो सबसे पहले वह अपनी पढ़ने की आदत छोड़ देता है जबकि किताबों का संग हमारे व्यक्तित्व को निखारनें में सहायक होता है।

पढ़ने के इस क्रम में व्यक्ति खुद ही यह महसूस करेगा कि वह अपने व्यक्तित्व की श्रेष्ठता के द्वार खोल रहा है। जो पुस्तके सबसे अधिक सोचने पर मजबूर करती है, वही हमारी सबसे अधिक सहायक होती है। पुस्तक के संदर्भ में कवि 'मिल्टन' ने कहा था, ''एक श्रेष्ठ पुस्तक एक महान आत्मा की बहुमूल्य विरासत है, जिसमें उसके जीवन के श्रेष्ठतम अनुभवों का सार उपलब्ध है।'' यदि पुस्तको का स्वाध्याय किया जाए और उससे प्राप्त ज्ञान को जीवन में उतारा जाए तो जीवन की अनेक विसंगतियों से सहज ही बचा जा सकता है।

पुस्तके हमारी विचारधारा को एक नया आयाम प्रदान करती हैं। व्यक्ति चाहें कितने भी तनाव, चिंता, अवसाद से घिरा हो परन्तु प्रेरणादायक पुस्तके पढ़ने से उसे सदा अपनी परेशनियों से उबरने में सहायता मिलती है।

पुस्तकों में अनेक विषय होते हैं।, हम जिस दिशा में भी आगे बढ़ना चाहते है, उस विषय की पुस्तकों को पढ़कर उचित जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।

पढ़ने की प्रक्रिया हमें स्वस्थ भी रखने में सहायक है, क्योंकि इस दौरान हमारा पूरा शरीर क्रियाशील हो जाता है तथा सभी इन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती है।

इस तरह उम्र चाहे जो भी हो अध्ययन की आदत मनुष्य को स्वस्थ जीवन देती है।

अध्ययन एक तरह का मानासिक व्यायाम है और उम्र बढ़ने के बाद भी व्यक्ति नियमित अध्ययन के द्वारा अपना मानसिक स्वास्थ्य सुरक्षित रख सकता है।

स्वाभिमान

हरि शंकर त्रिपाठी
प्रवक्ता

स्वाभिमान और अभिमान दोनों समोच्चरित शब्द हैं और उनके अर्थ भी लगभग एक जैसे लगतें हैं लेकित ये दोनों शब्द परस्परा एके दूसरे से भिन्न ही नहीं एक दम विपरीतार्थी है। स्वाभिमान आत्मगौरव, आत्मसम्मान के लिए प्रयुक्त होता है। पौरूषवाची शब्द है जो हमें जगाता हैं, प्रेरित करता है और हमें कर्तव्य के प्रति आगे बढ़ने के लिए ललकारता है। स्वाभिमान हमारे अपने विश्वास को जाग्रत करता है। हमारे अपने आत्मबोध को पुष्ट करता है और कितनी ही कठिन डगर हो स्वाभिमान हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता है। हमें जीवन मल्यों के प्रति, अपने उदेदश्य के प्रति, अपनी संस्कृति, समाज के प्रति स्वाभिमानी बनने की प्रेरण देता हैं।

मानव तीन ऋणों को लेकर जन्मता है।

पहला–पितृऋण। हमारे जन्मदाता ने जो शरीर प्रदान किया है हम अपने ही स्वरूप की संतति देकर पितृ–ऋण से मुक्त होकर स्वाभिमान पूर्वक सामाजिक संरचना के चक्र को पूरा करने में स्वाभिमान रखें।

दूसरा–सामाजिक ऋण। हम जिस समाज में है। इस समाज को अपने कार्य और बुद्धि–विवेक से समाज सेवा करने में स्वाभिमान की पवित्र भावना रखें।

तीसरा–राष्ट्र ऋण। हम जिस राष्ट्र में रहकर उसके अन्न–जल से पोषण प्राप्त करके अपना, अपने परिवार तथा अपने समाज के विकास में सहयोगी बनते है, उसके परिवार तथा अपने समाज के विकास में सहयोगी बनते है।, उसके राष्ट्राभिमान को जाग्रत रखना चाहिए। इस राष्ट्र पर किसी भी प्रकार की विपत्ति, संकट आए तो राष्ट्र को संकट से मुक्त करने के लिए अनेक राष्ट्रभक्तों ने स्वाराष्ट्राभिमान में वशीभूत होकर अपने को उत्सर्ग कर दिया। ऐसा स्वाभिमान जो हमारे विवेक को प्रकाशित करता है।

यह स्वाभिमान ही है जो हमें हमारी कठिन परिस्थितियो और विपन्नावस्था में भी डिगने नहीं देता। स्वाभिमान हमारी आन–बान शान का प्रतीक होता है। जबकि अभिमान हमें अहं से ग्रसित करता है, मिथ्या ज्ञान हमें घमंड, गर्व तथा अपने को श्रेष्ठ समझकर झूठा व दंभी बनाता है। अज्ञान के अंधेरेघेरों में ढ़केलता है। अभिमान मानव का, समाज का व राष्ट्र का शत्रु है।

अस्तु हमें अभिमानी न बनकर स्वाभिमानी बनना चाहिए। अपने राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान रखकर इस देश को उन्नतशील बनाना और स्वयं को विवेकशील बनाना चाहिए।

'न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग नाऽपुनर्भवम।

कामये दु:खतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।'

मैं राज्य की कामना नहीं करता। मुझे स्वर्ग और मोक्ष भी नहीं चाहिये। दु:ख से पीड़ित प्राणियों के कष्ट दूर करने में सहायक हो सकूँ यही मेरी कामना है।

पुस्तकालय

सावित्री मौर्या
पुस्तकालय अध्यक्ष

''कुछ होती हैं हल्की कुछ होती है भारी
लेकिन इनमें होती है दुनिया की हर जानकारी
अक्सर कुछ नया करने का इनसे ही बनता ख्याल है,
जिन्दगी में सबसे अच्छा दोस्त कोई और नहीं किताब हैं।
ज्ञान की ये खान है, होती बहुत नादान है।
जीवन ये इंसान का बदले तभी तो इसकी शान है।
क्या बीता क्या खोजा है। सबका इसमें हिसाब है।
जिन्दगी में सबसे अच्छा दोस्त कोई और नहीं किताब है।''
जिस दिन मन्दिरों मे जाने वाली लाइनें ग्रन्थालयों में जायेगी
उस दिन भारत विश्व में महाशक्ति बने जायेगा।

पर्यावरण प्रदूषण

रवि रावत
कार्यालय तकनीकी सहायक

मैं बात करता हूँ भारत सरकार द्वारा संचालित ऐसे मिशन की जिसका प्रारम्भ 2 अक्टूबर 2014 को हुआ था एवं जिसका उदेश्य देश को स्वच्छ रखना ताकि लोगों को शुद्ध पर्यावरण मिल सके। जिससे वे अपना जीवन खुशहाल तरीके से जी सके इस सम्बन्ध में एक बात तो पूरी तरह से स्पष्ट है कि भारत सरकार के इस मिशन में पर्यावरण प्रदूषण का बहुत महत्व पूर्ण स्थान है। इसी लिए मैं इस लेख में पर्यावरण प्रदूषण की व्याख्या कर रहा हूँ।

'' पर्यावरण किसे कहते हैं आओ हम सब इसको जाने पर्यावरण प्रदूषण के सब खतरों को पहले पहचाने''

''जो है चारो तरफ हमारे, पर्यावरण उसे कहते हैं। ध्वनि, मिट्‌टी , जलवायु आदि सब, इसके अर्न्तगत रहते है।''

''कान फोड़ती सारी ध्वनियां, ध्वनि प्रदूषण उपजाती है।''
बहरेपन से ह्रदयरोग तक सभी व्याधियां लाती हैं''

'' खाद यूरिया फास्फेट सब, मृदा प्रदूषण बढ़ा रहे है।
डिटर्जेट और केमिकल्स भी, जल को दूषित बना रहे हैं।''

'' डीजल और पेट्रोल आदि सब, ऐसी वायु प्रदूषित करते।
बच्चे, बूढे, युवा सभी जन, बिना मौत बेचारे मरते है।''
एक प्रदूषण और बढ़ रहा, आओ इसको भी हम जानें।
यह चरित्र को मिटा रहा है, इसको भी हम सब पँहचानें।''

धर्म

ऐयवर्या
प्रवक्ता (बी0कॉम)

जिन मुश्किलो में मुस्कुराना हो मना
उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है ।
'' जिस वक्त जीना गैर मुम्किन सा लगे
उस वक्त जीना फर्ज है इन्सान का
लाजिम लहर के साथ तब खेलना
जब हो समुन्दर पे नशा तूफान का''
'जिस वायु का दीपक बुझना ध्येय हो
उस वायु में दीपक जलाना धर्म है।'
''हो नही मंजिल कहीं जिस राह की
उस राह चलना चाहिए इसांन को
जिस दर्द से सारी उमर रोते कटे
वह दर्द पाना है जरूरी प्यार को''
'जिस चाह का हस्ती मिटाना नाम है
उस चाह पर हस्ती मिटाना धैर्य है।'
''आदत पड़ी हो भूल जाने की जिसे
हरदम उसी का नाम हो हर सांस पर
उसकी खबर में ही सफर सारा कटे
जो हर नजर में हर तरह हो बेखबर''
'जिस आंख का आंखे चुराना कार्य हो
उस आंख से आंख मिलाना धर्म है।'

सबसे वफादार मित्र ''दुःख''

सुनीता
(वार्डन) गर्ल हास्टल

सबसे वफादर मित्र वो होता है जो रूप बदल–बदल कर आपके सामने आता है। और हमेशा दु:ख ही तो सीने से लिपट कर रहता है। ये दु:ख कभी परिवार के कभी माँ–बाप के, तो कभी संतान दु:ख के रूप में आता है। परन्तु हम अपने करीबी मित्र को छोड़ कर सुख को अपना मित्र मान लेते है। जो हमेशा हमसे दूर भगता है। कभी पल भर के लिए सुख आता है। और फिर चला जात है। परन्तु मनुष्य इतना मूर्ख है कि उस धोखेबाज सुख को ही अपना परम मित्र मान लेता है। जो हमेशा उसका साथ छोडकर चला जाता है। और दु:ख रूपी मित्र को बैरी समझता है। लेकिन जो मनुष्य दु:ख को अपना मित्र मान लेते है। और अपना जीवन दु:खों के साथ प्रसन्न मन से व्यक्ति करते है। उनका जीवन धन्य होता है। और वही व्यक्ति महान होता है। तथा उन्हे कभी कोई कष्ट का अनुभव ही नहीं होता है। सुख तो एक छलिया है। जो पल भर का साथी होता है। सच्चा मित्र तो वो होता है जो सदा हमारे साथ रहे और केवल दु:ख ही वो सच्चा मित्र है। जो सच्चे मित्र को पहचानने की जरूरत होती है। और मित्र मिल जाते है।

चरक ग्रुप ऑफ एजुकेशन, मौरा, लखनऊ

भारतीय अर्थव्यवस्था का एक सामाजिक पहलू

परिचय :

आज भारत के वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था जो कि ''मिश्रित अर्थव्यवस्था'' है। उसकी सबसे बड़ी समस्याओं में अगर कोई संकट उभर कर आता है, तो वह ''प्रति व्यक्ति की वास्तविक न्यूनतम आय है।'' यह एक बहुत बड़ी समस्या है। एक ऐसी समस्या जो आगे कुछ ही वर्षों में विकराल रूप ले लेगीप् यह समस्या कई और समस्याओं को भारतीय अर्थव्यवस्था में जन्म दे रही हैप् प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी समस्या को, चाहे वो आर्थिक रूप में हो या सामाजिक रूप में, उनको पूर्णतया प्रभावित भी कर रही है।

हमारा भारत एक विकासशील देश है जिसकी अर्थव्यवस्था में लगभग 8230 अरब डॉलर संचित है। तब भी हमारे यहाँ ''प्रति व्यक्ति की वास्तविक न्यूनतम आय'' का बहुत ही बुरा हाल है। जब कि चाइना भी विकासशील देश है किन्तु वहाँ की प्रति व्यक्ति न्यूनतम आय भारत से कहीं अच्छी है। जबकि जनसंख्या के मामले में भी चाइना भारत से एक कदम आगे है।

' इसका सीधा सम्बन्ध रोजगार से भी है। क्योंकि हमारा देश विश्व का सबसे जवान देश है। अर्थात यहाँ पर सबसे ज्यादा जनसंख्या युवाओं की है। फिर भी हम उनके श्रम और कौशल का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। विश्व में सबसे ज्यादा संख्या में लोग रोजगार के लिए पलायन भी यँही से विदेश के लिये करते हैं।

रिपोर्ट्स एवम सर्वे क्या कहती हैं :

* Oxfam सर्वे के अनुसार भारत के 1% भारतीयों के पास देश की 73% सम्पत्ति हैप् और यही नहीं भारत के 67: लोग अब भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत करने को मजबूर हैं। इन 67% लोगों में से 1% लोग ही ऐसे हैं जिनकी आय में मामूली बढ़ोत्तरी हुई है।

* यही नहीं भारत के 20 से 25 लोग ऐसे हैं जिनके पास भारत की 50% अर्थव्यवस्था का भाग है।

* Oxfam के अनुसार भारत के 9 धनी व्यक्तियों की सम्पत्ति भारत के 65करोड लोगो के सम्पत्तियों के बराबर है। और भारत के 119 अरबपतियों की सम्पत्तियों में प्रतिदिन 2200 करोड रुपये का इजाफा हुआ।

* 13 करोड 60 लाख भारतीय 2004 से कर्ज में डूबे हुए हैं।

* 1(CEO) के बराबर सलाना कमाने में एक मजदूर को लगभग 941 साल लग जायेगा।

* भारत मे 1% धनी व्यक्तियों की सम्पत्ति 39% की रफ्तार से एक साल मे बढती है। लेकिन 50% आम लोगों की सम्पत्ति सिर्फ 3% ही बढी।

* 119 अरबपतियों की सम्पत्ति देश के बजट से ज्यादा है।

* भारत के 60% आम लोगों के पास भारत की सम्पत्ति का सिर्फ 4% हिस्सा है।

* Forbes के अनुसार 2014 में अकुशल मजदूर को हर महीने 13300.00 रुपये मिलते थे जो कि घटकर 2017 में हर महीने 10300.00 रुपये हो गया।

* गरीब परिवारों की औसत मासिक आय 8059.00 रुपये और औसत मासिक खर्च 6646.00 रुपये हैए अर्थात 1413.00 रुपये की बचतप् और जो बचता है उसमें से ग्रामीण परिवारों को कर्ज भी देना होता है।

* 1% ग्रामीण अपने आभूषण गहने बेचकर इलाज कराते हैं। तो 25% ग्रामीण परिवार कर्ज लेकर इलाज करवाते हैं।

* नोटबंदी जैसे फैसलों से भी गरीबो पर भार पडा और जानमाल की हानि हुई है जबकि लगभग 99% से अधिक नोट बैंकों मे वापस आये।

* पैसा छुपाने का और कालाधन बढाने में क्रिप्टो करेंसी भी सहायक है जो अधिक मात्रा में है। जैसे Bitcoin ftls Hack नहीं किया जा सकता उसकी कीमत इतनी ज्यादा बढना भी संकेत देते हैं कि उसमें भी कालाधन बडे पैमाने में है।

ध्यान देने योग्य बातें एवं समस्याएँ।

* जैसा कि हम देख रहे हैं ये जो असंतुलन है यह गरीबो व अमीरो के बीच बढता जा रहा है। जो कि बहुत ज्यादा है। यह आगे बहुत बढी दुविधा का कारण बनेगा।

* भारतीय संसद के दोनो सदनो के माननीय सदस्यो ने समय समय पर इन सब बातों को रखा एंव स्वीकारा है।

* देश में भुखमरी की संख्या में बढोत्तरी हो रही है। कुपोषण बढ रहा है।

* किसान जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत्र है, उसी का हाल बदहाल है। वही सबसे ज्यादा घरेलू पलायन करने को मजबूर है।

* निजी क्षेत्रों को सिर्फ नियम बनाकर छोड देना और उनकी कार्यप्रणाली पर ध्यान न देना।

* मँहगाई दिन प्रतिदिन बढती जा रही है। वेतन आयोग आते जा रहे हैं। मगर गरीबों की आय और जीवनयापन वही है या खतरे में है।

* ये कारण सबसे ज्यादा अराजकता समाज में फैला रहा है। भ्रष्टाचार और बेरोजगारी का सबसे बड़ा कारण क्या है ये नीतियों में साफ दिखता है।

* सरकार को गरीबों व आम लोगों के लिए अलग से बजट लाने की जरुरत है। जिससे प्रति व्यक्ति वास्तविक न्यूनतम आय उसे मिल सके और परिवार का जीवन यापन व शिक्षा दिक्षा हो सके।

* सरकार को कर प्रणाली सुधारने की आवश्यकता है। जिससे आम नागरिको को लाभ पंहुचाया जा सके। इस असंतुलन को कम या खत्म किया जा सके।

* सरकार को ''नैगमिक सामाजिक उत्तरदायित्व'' (Corporate Social Responsibility) की नीतियां सुधारने व उनकी सीमा तय करने की आवश्यकता है।

* सरकार को गरीबों के प्रति नीतियाँ बनाने व उन्हे जमीन में कैसे सफल किया जाय व उतारा जाय इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

जय हिन्द! जय भारत!

(आकाश भारती)
असिस्टेंट प्रोफेसर
वाणिज्य विभाग

स्वयं अंदर से प्रकट होता है ज्ञान

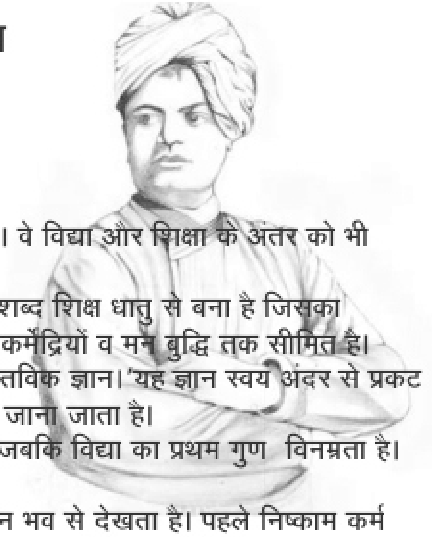

राम नरेश यादव
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

अध्यात्म विद्या के विषय में अधिकांश भौतिक विद्वान शिक्षा को ही विद्या मान बैठते है। वे विद्या और शिक्षा के अंतर को भी समझने में असमर्थ हैं जबकि विद्या और शिक्षा में धरती और आसमान का अंतर है।
इस विषय को स्पष्ट करते हुए महात्मा परचंतनानंद ने अपने प्रवचन में हा कि शिक्षा शब्द शिक्ष धातु से बना है जिसका सीखना। भौतिक शिक्षा अनुकरण के द्वारा सीखी जाती है जिसका संबंध ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेद्रियों व मन बुद्धि तक सीमित है। इसके अतिरिक्त विद्या शब्द विद धातु से बना है जिसका अर्थ है 'जानना अर्थात् वास्तविक ज्ञान।' यह ज्ञान स्वयं अंदर से प्रकट होता है, इसे ही अध्यात्म ज्ञान कहा जाता है। इसे आत्मा की गहराई में पहुंचने पर ही जाना जाता है।

शिक्षा के विद्वान अंहकार से ग्रसित होते हैं, उनमें विनम्र का अभाव होता है जबकि विद्या का प्रथम गुण विनम्रता है। विद्या वास्तव में मानव की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।

इस अध्यात्म विद्या से मानव निष्काम कर्म योगी बनता है जो सभी को समान भव से देखता है। पहले निष्काम कर्म योगी की ही प्रजा अपना राजा चुनती थी। वे अपने पुत्र तथा अन्य प्रजा के साथ समान रूप से न्याय करते थे।

आज के असमय में अध्यात्म विद्या का अभाव होन के कारण राजा और प्रजा दोनों ही अशांत हैं फिर भी इस ओर कोई ध्शन नहीं दिया जा रहा है जबकि 'अध्यात्म विद्या' के वेत्ता तत्वदर्शीसंत आज भी मौजूद हैं।

एक शिक्षक का पत्र

छात्र जीवन भावी जीवन की आधारशिला है, तुम सब जीवन की उस धुरी पर खड़े हो जहाँ से तुम्हारे जीवन को एक नवीन राह मिलेगी जो तुम्हे जीवन की उस मंजिल तक ले जाएगी जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। इस पत्र के माध्यम से मैं तुम्हे यह बताना चाहता हूँ कि विद्यार्थी जीवन तुम्हारे जीवन तुम्हारे जीवन का महत्वपूर्ण काल है। इस कारण इसे व्यर्थ नहीं गवाँना चाहिए।

शास्त्रों में आदर्श विद्यार्थी को लगनशील, एकाग्रचित, सजग, चुस्त कम भोजन करने वाला और अच्छा आचरण करने वाला बताया गया है।

काक चेष्टा, वको ध्यानम् श्वान निद्रा तथैवश्च।
अल्पहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणमृ।।

बच्चों तुमने कौए को अपने शिकार की ओर झपटते देखा है एक झपट्टे में ही ले उड़ता है। तुम भी सजग और चुस्त होकर पाठ की विवेचना करो। फिर आती है ध्यान की बात तो बगुले की एकाग्रता देखी है कभी जल में डूबती, उतरती, तैरती मछली को पाने के लिए घण्टों एक पैर पर खड़ा रहता, तुम भी उसका अनुसरण करो अपने जीवन लक्ष्य की पूर्ति के लिए एकाग्रचित होकर अध्ययन, मनन, अनुशीलन करो। अब मैं तुमको शास्त्रों में उल्लिखित जिस उदाकरण को स्पष्ट कर रहा हूँ उसे सुनकर तम्हे हँसी आएगी। हाँ, कुत्ते के समान नींद में सोना विद्यार्थी की एक पहचान है। पूरा तत्पर, पूर्ण चौकन्ना, जरा सा खटका हुा नहीं कि जग पड़ा तुम भी मेरे प्यार बच्चों इतनी गहरी स्वच्छन्द और निश्चिन्त नींद न सोवो कि समय तुम्हारे हाथों से रेत ही भाँति निकल जाए और तुम ढूँढ़ते रहो क्योंकि :

जो सोवत हैं वो खोवत हैं
जो जागत हैं वो पावत हैं।

बच्चों, आपको पता है कि अधिक खाने से आलस्य उत्पन्न होता है। विशेषकर फास्ट फूड, बर्गर, पिज़ा इस समय तुम्हारा जो प्रिय भोजन बन चुका है उसे बिल्कुल मत खाओ, ऐसा मैं नही कहता, पर कम खाओं बच्चों पहले शरीर बनाओं क्योंकि तुमने सुना होगा "Sound mind in sound body" मस्तिष्क के विकास के लिए उचित खान–पान पर ध्यान दो। अब बात आती है तुम्हारे सदाचारी बनने की कोई भी बालक स्वाभविक रूप से बुरा नहीं होता समाज की गलत नीतियाँ उसे अनुशासनहीन बनाती हैं, तुम सब सुख मनोरंजन का त्याग करो यह मैं नही कहता, पर अपने विवेक बुद्धि का सही उपयोग करके देखो क्या अचित क्या अनुचित फिर अपनाओं। बहुत पुरानी बातें–बडों की बात मानो, उसे समझो, अपनाओं, शिक्षक का सम्मान करो, वह तुम्हारा भला चाहते हैं। नैतिक मूल्यों को समझो, माता–पिता, शिक्षक तुम्हारे साथ हैं। अपने जीवन को दिशाहीन न होने दो, मेरी बातो को कोरा उपदेश न समझो। तुम भविष्य के निर्माता हो, भविष्य तुम्हारी राह देख रहा है।

अंकुरेश प्रताप जौहर
बी.एड.–चतुर्थ सेमेस्टर

सहशिक्षा – एक सुझाव

सह–शिक्षा का अर्थ है बालक और बालिकाओं का एक साथ एक विद्यालय में अध्ययन करना। समाज में स्त्री–पुरुष सब साथ–साथ रहते हैं, इसलिये बालक और बालिकाओं की सह–शिक्षा के सम्बन्ध में प्रश्न उठाना नहीं चाहिए, परन्तु फिर भी कुछ भारतीय विद्वान इसके पक्ष में है और कुछ विपक्ष में विदेशी सम्यता ने उपहार में जहाँ भारतीयों को अन्य वस्तुयें दी, वहाँ सह–शिक्षा भी दी। यूरोप में सह–शिक्षा का जन्म स्विट्जरलैण्ड से हुआ, फिर धीरे–धीरे इंगलैड, अमेरिका तथा फ्रांस में भी सह–शिक्षा बढ़ने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी में भारत वर्ष में भी राह–शिक्षा ने पदार्पण किया। भारतवर्ष में तब स्त्री–षिक्षा का विरोध किया जाता था। भारतीयों के सामने यह दूसरी समस्या आई। कुछ लोगों ने इसका स्वागत किया, परन्तु अधिकांश लोगों ने इस नयी पद्धति को दोषयुक्त बताया, क्योकि भारतीय इस बात पर विश्वास करते थे, कि दलित और स्त्री न पढ़ें। जो लोग स्त्री का पढ़ना ही हानिकारक समक्षते थे, भला यह–शिक्षा का स्वागत कैसे सकते थे । मुगलकाल में तो सित्रयों`ा घर से बाहर निकलना भी आपत्तिजनक था, इसलिये परदे की प्रथा का जन्म हुआ था। अब धीरे–धीरे स्त्रियों की शिक्षा तो प्रारम्भ हो गई, परन्तु अब प्रश्न यह आया कि लडकियों की शिक्षा के लिये अलग संस्थायें या उनको भी लड़कों के विद्यालय में पढ़ने दिया जाये। पिछली दो शताब्दियों में इस समस्या पर जोरदार विवाद चलता रहा है, फिर भी यह योजना देश में किसी न किसी रूप में चल रही है।

समर्थकों का कथन है कि प्राचीन भारत में भी सह–शिक्षा थी। ऋषियों के गुरूकुलों में मुनिकुमार और मुनिकन्यायें साथ–साथ पढ़ते थे। उनकी शिक्षा–दीक्षा पुरुषों के समान ही होती थी। बाल्मीकि के आश्रम में आत्रेयी और महर्षि कण्व के आश्रम में शकुन्तला अन्य कुमारों के साथ विद्याध्ययन करती थी। वेदमन्त्रों की रचना करने वाली स्त्रियों के नाम भी वेदो में मिलते हैं। उपनिषदों में गार्गी का वर्णन आता है, जिसने अपनी विद्वता से महर्षि याज्ञवलक्य को निरुत्तर कर दिया था। अपने पति की पराजय से दु:खी होकर मण्डन मिश्र की पत्नी ने शंकराचार्य ती से घण्टों शास्त्रार्थ किया था। स्त्री–शिक्षा औश्र यह–शिक्षा के कारण देश में स्वस्थ वातावरण था एवं लोगो के आचरण धर्मयुक्त शुद्ध थे।

भारतीय संविधान में नारी को पुरुषों के समान ही अधिकार दिये गये हैं वैसे भी आज का युग समानता का युग है, परन्तु यह अधिकार तभी सफल हो सकता है, जब दात्र और छात्रायें शिक्षा काल में साथ उठें–बैठें, साथ पढ़ें अर्थात् एक–दूसरे के सम्पर्क में आयें तभी भावी जीवन में स्त्रियाँ पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर देश–हित कर सकती है। साथ–साथ पढ़ने से लड़के और लड़कियाँ एक दूसरे के स्वभाव से परिच्ति हो जाते है। कभी –कभी वे अपना जीवन साथी भी स्वत: ढँढ़ने में सफल हो जाती हैं। इस प्रकार समाज की दहेज आदि बहुत सी कुरीतियाँ स्वयं नष्ट हो जाती है। ऐसी गुणवती स्वयंवरा कन्यायें माता–पिता पर भार नहीं बनती।

पारस्परिक प्रतिद्विन्दिता के कारण छात्र तथा छात्रायें एक–दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयत्न करते है। छात्र को सदैव यह घ्यान रहता कि कहीं लड़की मुझसे ज्यादा अंक न ले आये–इस कारण वह और भी अधिक परिश्रम करता है, इसी प्रकार यह सोचकर लड़कियाँ भी अधिक परिश्रम करती हैं।

अत: शिक्षा योजना की सफलता के लिये आवश्यक है कि लड़के और लड़कियों का अध्ययन एक साथ हो।

अंकुरेश प्रताप जौहर

''विश्वास और शक एक सेठ की कहानी''

हिमानी पाण्डेय
बी0एड0

एक सेठ ने अपने घर में साफ–सफाई के लिए एक लड़के को नौकरी पर रख लिया लेकिन सेठ थोड़े शक्की किस्म का था और उसे लड़के पर भरोसा नहीं था तो उसकी ईमानदारी परखने के लिए सेठ ने उसकी परीक्षा लेनी चाही तो फर्श पर एक रूपये का नोट डाल दिया तो लड़के ने जब सफाई करते समय उसे देखा दूसरे दिन जब वो सफाई करने लगा तो उसने देखा कि फर्श पर पाँच रूपये पडे है इस पर उसने थोडा शक पैदा हुआ उसे लगा कि सेठ उसकी नियत को परख रहा है तो उसने जाकर पैसे सेठ को सौप दिए और कुछ नहीं बोला वो जब भी घर में काम करता था तो सेठ की निगाहें बराबर उसकी चोकसी करती मुश्किल से एक हफ्ता बीता होगा कि उसे फर्श पर इस बार दस रूपये का नोट पड़ा मिला अब तो उसके तन बदन में आग लग गयी और सीधा सेठ के पास पहुँच गया और बोला लो सँभालो अपनी नौकरी लो सँभालो अपना नोट और लड़का गुस्से में सेठ से बोला कि यह समझ ले अविश्वास से विश्वास नहीं पाया जा सकता है। इसे समझने के लिए पैसे के अलावा कुछ और चाहिए जो तुम्हारे पास नहीं है। मैं ऐसे घर में काम नहीं कर सकता हूँ सेठ उसे देखता ही रह गया और इस से पहले की सेठ कुछ कहता लडका जा चुका था।

विश्वास पर दुनिया कायम है हमें बेवजह किसी पर इतना शक नहीं करना चाहिए। क्योकि शक ही विश्वास का सबसे बड़ा दुश्मन होता है।

सीख

एक बार एक पुत्र अपने पिता को वृद्धाश्रम, अनाथ आश्राम में छोड़ने गया और छोड़कर रास्ते में ही था कि पत्नी का फोन आया और बोली ''पापा से कह दीजिए की जन्मदिन त्यौहार पर भी घर आने का कष्ट न करें वहीं पर रहें'' कह कर फोन काट दिया पुत्र यह सब बताने के लिए पुनः आश्रम पहुंचा तो देखा कि पिता जी उस आश्रम के व्यक्ति के साथ बहुत हिलमिल कर बात कर रहें हैं मेरे मन उत्सुकता जागी कि पापा जी इस व्यक्ति को कैसे जानते है। पापा जी उस व्यक्ति से मिलकर अपने कमरे की व्यवस्था देखने के लिए चले गये पुत्र से रहा नहीं गया तो उसने व्यक्ति से पूछा कि आप मेरे पिता जी को कब से जानते है तो उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि पिछले 30 वर्षो से मैं इन्हे जानता हूँ जब ये यहाँ से एक अनाथ बच्चा इसी आश्रम से ले गये थे .....

अमित मिश्रा
कार्यालय सहायक

मेरा लखनऊ

क्षमा अग्निहोत्री
कार्यालय सहायक

मेरा लखनऊ मेरी जान।
इसका हम सबको रखना ध्यान।।
पहला कदम उठाते हैं, पॉलीथीन भगाते हैं।
पेपर बैग लाते है कुछ भाइयों को रोजगार दिलाते है।।
अगला कदम बढ़ाते हैं गोमती स्वच्छ बनाते हैं।
इसको निर्मल धारा दे, लखनऊ को मान बढ़ाते है।।
आगे बढ़ हजरतगंज, अमीनाबाद जाते हैं।
यातायात दुरस्त बनाने का बीड़ा उठाते है।।
रूमी दरवाजा, इमामबाड़ा देख मन को लुभाते हैं।
इसकी सुन्दरता को और बढ़ाने का मन बनाते हैं।।
आगे हाथ बढ़ाकर साथ–साथ रेजीडेन्सी जाते हैं।
इसमें भ्रमण कर अपना ज्ञान बढ़ाते हैं।।
इसके पार्क, ऐतिहासिक इमारतें और संस्थान
सैलानियों और विद्यार्थियों को लुभाते है।।
मेरा लखनऊ मेरी जान।
इसको दिलानी है विश्व में ऊँची पहचान।।

प्रेम को जीवन में उतारे

प्रेम मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। जिसके जीवन में प्रेम नही उतरा तो समझो सब कुछ व्यर्थ है प्रेम की भाषा मनुष्य नहीं, अपितु पशु–पक्षी भी समझते है। प्रेम में ऐसी ताकत है कि पराए भी अपने बन जाते है। प्रेम के दो बोल बोलने मात्र से निराश और चिंचित चेहरों पर भी मुस्कराहट आने लगती है। कबीर दास जी भी कहते है– 'ढाई आखर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय।'

जो सच्चा प्रेमी है वह जीवन को सुवासित करने की अद्‌भुत शक्ति रखता है। वस्तुतः हम सभी प्रेम के धागे से बंधे है और यही भाव समस्त वसुधा को एकता के सूत्र में पिरोने का काम भी करता है। वह प्रेम ही है जो समस्त धरा पर शंति के फूल खिला सकता है। परमात्मा जिस पर कृपा करते है उसके मन की गागर को प्रेम से भरा है परन्तु हमने कितना पिया? प्रेम वाला जहां कही भी जाता है उसमें चारो तरफ शांति का वातावरण अपने आप बन जाता है। मानवता भी श्रेष्ठतम धरातल पर तभी अवस्थित होगी, जब हर एक प्राणी प्रेम से परिपूर्ण हो। इसलिए केवल प्रेम पियारा कहा गया है। ''रामहिं केवल प्रेम पियारा''।

जितेन्द्र सिंह
कार्यालय सहायक

प्रदूषण

प्रदूषण एक प्रमुख पर्यावरण मुद्दा बन गया है क्योंकि यह हर आयु वर्ग के लोगों और जानवरों के लिए स्वास्थ्य का खतरा है। हाल के वर्षो में प्रदूषण की दर बहुत तेजी से बढ़ रही है क्योंकि औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ सीधे मिटटी, हवा और पानी में मिश्रित हो रही है।

प्रदूषण प्राकृतिक संसाधनों के प्रभाव के अनुसार कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है जैसे की वायु–प्रदूषण, भू–प्रदूषण, जल–प्रदूषण की दर इंसान के अधिक पैसे कमाने के स्वार्थ और कुछ अनावश्यक इच्छाओं को पूरा करने की वजह से बढ़ रही है। आधुनिक युग में जहाँ तकनीक उन्नति को अधिकाधिक प्राथमिकता दी जाती है वहां हर व्यक्ति जीवन का असली अनुशासन भूल गया है। लगातार और अनावश्यक वनों की कटौती, शहरीकरण, औद्योगीकरण के माध्यम से ज्यादा उत्पादन, प्रदूषण का बड़ा कारण बन गया है। इस तरह की गतिविधियों से उत्पन्न हुआ हानिकारक और विषैल कचरा, मिट्टी हवा और पानी के लिए अपरिवर्तनीय परिवर्तन का कारण बनता है जो कि अंततः हमें दु:ख की ओर अग्रसर करता है।

हमें प्रदूषण की समस्या का समाधान करने के लिए वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए वृक्षारोपण सर्वश्रेष्ठ साधन है। कारखाने और मशीने लगाने की अनुमति उन्ही लोगों को दी जानी चाहिए जो औद्योगिक कचरे और मशीनों के धुँए को बाहर निकालने की समुचित व्यवस्था कर सकें। तेज ध्वनि वाले वाहनों पर साइलेंसर आवश्यक रूप से लगाए जाने चाहिए तथा लाउडस्पीकरों आदि के प्रयोग को नियन्त्रित किया जाना चाहिए।

शंशाक श्रीवास्तव
कार्यालय सहायक

पिता

पिता एक उम्मीद है, एक आस है
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है
उसके दिल में दफन कई मर्म है।
पिता संघर्ष की आँधियों में हौसलों की दीवार है
परेशनियों से लड़ने को दो धारी तलवार है,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।
पिता जिम्मेदारियों से लदी गाड़ी का सारथी है
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी है
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है।
पिता जमीर है पिता जागीर है
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है,
कहने को सब ऊपर वाला देता है
पर खुदा का एक रूप पिता का शरीर है।

रहनुमा जमीर
(बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर)

विद्या

1– कोशिश करने पर अगर असफलता मिले तो वह सफलता की पहली सीढी होती है।

2 – कडी से कडी जोडो तो जंजीर बन जाती है,
मेहनत से मेहनत जोडो तो तकदीर बन जाती है।

3– एक पत्थर पूंजने से भगवान की पूजा नहीं होती है भगवान तो हमारे माता–पिता होते है।

4– परदेशों में विद्या मित्र होती है। घरों में भिाता मित्र होती है। बीमारी की मित्र दवा होती है। मरने के बाद धर्म मित्र होता है।

5– विद्यार्थी सदैव सुख और दु:ख सहन करते हैं। विद्या अभ्यास करने में सुख और दु:ख दोनों ही होते हैं।

6– विद्या कुरूप लोगों का रूप तथा कमजोरों का बल विद्यासे होता है। गरीबों का बल विद्या है तो फिर हमें प्रयत्नपूर्वक विद्या प्राप्त करनी चाहिए।

आरती
(बी.ए.)

चरक इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन

काफी कुछ सीखा मैने चरक इन्स्टीट्यूट एजुकेशन में कोई तो जागरूकता बढ़ाएगा इस नेशन में ।
सुबह–सुबह बहुत खुबसूरत लगती है यहाँ की हरियाली इसका ख्याल रखते है माली ।
यहाँ प्रत्येक विषय की उपस्थिति है लैब यहाँ आवश्यकता अनुसार प्रयोग कर सकते है मोबाइल या टैब।
बहुत ही अच्छी है यहाँ की सुविधा मैने तो आज तक महसूस नहीं की कोई दुविधा ।
बहुत ही अच्छे है यहाँ के फाउण्डर हर चीज मे है वो ऑल राउण्डर। टीचर तो है यहाँ के लाजवाब
उनका कहना है सबकुछ बनना मगर मत बनना कभी नवाब ।
यह है पूरे देश का सबसे अच्छा डिग्री कालेज,
क्योंकि यहाँ प्राप्त कर सकते है पूरे संसार का नॉलेज
इस कालेज की है बहुत ही अच्छी स्थिति
सबको हम बढ़ायेंगे आगे यह है इसकी नीति।
बहुत ही कम है यहाँ की फीस रूपये है पच्चीस और पैसे है तीस
असफलता के खिलाफ रहते है, यहाँ के लोग
सूरूचि नर्सिंग का है यही सपना दूर होगा आपका रोग।
यहाँ के संस्कार ने बना दिया, झूठ बोलने वालो को भ सच्चा तारीफ करता है,
यहाँ का एक – एक बच्चा
अब तो करा लो यहाँ एडमिशन यहाँ की देखकर कण्डीशन

www.clipartof.com - 1160741

खुशबु गौतम
बी.एस.सी.–।

मूल–मन्त्र

हमारे देश का प्रजा तंत्र वह तंत्र है जिसमें बीमारी स्वतन्त्र है दवा चलती रहे बीमार चलता रहे–

यही मूल मन्त्र है–

दर्जी से कहा – कुर्ता पेट से टाईट सिला है।

तो बोला – कपड़ा क्या आपको प्रजेण्ट में मिला है पानी में डालते ही आधा रह गया अब जैसा बना है ले जाइए कुर्ते को पेट के लायक नहीं पेट को कुर्ते के लायक बनवाइए।

फलवाले से कहा – ऊपर से देखने में चिकना है। भगवान जाने रस कितना है–

तो बोला – गीता में श्री कृष्ण ने कहा– कर्म करो और फल मुझ पर छोड़ दो हम दोनों ने अपना कर्म किया मैंने दिया और आपने लिया अब फल अच्छा निकले या खराब यह तो हरि इच्छा जनाब।

बेटे से कहा – बाल मत बढ़ाओ–

तो बोला – पापजी आदर्श का पाठ मत पढ़ाओ हम जमाने के साथ चल रहे हैं आपके बाल नहीं हैं न इसलिए आप जल रहे हैं।

मालकिन ने कहा – एक तो बर्तन चुराती हो ऊपर से आँख दिखाती हो।

नौकरानी बोली – दिखा तो आप रही है बर्तन मँजवाओ, न मँजवाओ चोरी का इल्जाम मत लगाओ हमें पता है कि आप कितने बड़े हैं आधे बर्तनों पर तो पड़ोसियों के नाम पड़े हैं।

अभिषेक गुप्ता
बी.एस.सी.–।

सरकारी बस

मध्यप्रदेश की एक सरकारी बस चार घंटे में केवल चार किलोमीटर चली।
किसी ने कारण पूछा,तो बोला दुर्घटना से देर भली।।
कन्डक्टर छत पर बैठकर टिकट बना रहा था। ड्राईवर खड़े होकर बस चला रहा था।।
बिना काँच की खिड़िकियाँ , बिना दरवाजे की बस खूब जँच रही थी। हार्न को छोड़कर पूरी बस बज रही थी।
सामने से आती हुई भैंस को देखकर बस अचानक बिचक गई।
नाले से बची तो नदी में उतर गयी।।
जितने बच्चे थे सब रो रहे थे। बाकी के आदमी छत पर बैठकर कपड़े धो रहे थे।।
एक आदमी बोला, ड्राईवर साहब बस बाहर कैसे लाएँगे।
ड्राइवर बोला धक्का कौन तुम्हारे बाप लगाएँगें।
फिर ड्राइवर बोला, अगर आबादी इसी तरह से बढ़ी तो ये धरती जापान, नेपाल की तरह हिलेगी।
और आने वाली पीढ़ीको बस छत पर भी जगह नहीं मिलेगी।।

अन्जू यादव
(बी.एस.सी. –।।)

शिक्षक

गुरू के बिना ज्ञान कहाँ, ज्ञान बिना मान कहाँ।
गुरू ने दी शिक्षा जहाँ,सुख ही सुख ही है वहाँ।।
जिसे देता है हर व्यक्ति सम्मान,
जो करता है वीरों का निर्माण ।
जो बनता है इंसान, ऐसे गुरू को करते हम प्रणाम।।
अज्ञान को मिटा कर, ज्ञान का दीपक जालाया है ।
गुरू कृपा से मैने ये अनमोल शिक्षा पाया है।।
बन्द हो जाये सब दरवाजे, नया रास्ता दिखाते हैं गुरू ।
सिर्फ किताबी ज्ञान नही, जीवन जीना सिखाते हैं गुरू।।
वाणी शीतल चन्द्रभाम मुख मण्डल सूर्य समान।
गुरू चरन त्रिलोक है, गुरू अमृत की खान।।
मुझ पर मेरे गुरूओं का प्यार और उनका आशीर्वाद रहने दो।
बडा हसीन है ये कर्ज, मुझे कर्जदार रहने दो।।
ऐस गुरू जिसको सब अपना रहनुमा बना ले।
ज्ञान ऐसा दे जो जिन्दगी को खुशनुमा बना दें।।
लक्ष्य प्राप्त कर से आपसे मुझे इस योग्य बनाया।
जब महसूस किया कि मैं हारी
तो आपका दिया ज्ञान काम आया।।
गुरू में वो शक्ति हैं, जो कुछ भी कर सकती है।
ज्ञान ही है जो बढ़ाने पर बढाती हैं।।
पिता जन्म देता महज, कच्ची माटी होय।
गुरूजनों के शिल्प से, मिट्टी मूरत होय।।

उपासना सिंह
(बी.एस.सी. ।। सेमेस्टर)

याद आती हो माँ

याद आती हो माँ
शाम की चादर सिमटने से पहले
भोर का परदा उठाने से पहले
तारों की झिलमिल–झिलमिल रंगीनियों में
बाँसुरी की मीठी–मीठी स्वर लहरियो में
चँदा का घूँघट उठने से पहले

याद आती हो माँ
होठो की कलियों के खिलने से पहले
नैनो से मोती विखरने से पहले
याद आती हो माँ
तेरी वह ममता की शीतल छुअन
बाते वह तेरी है ठण्डी पवन
मेरे लिए है तु ईश्वर से पहले

याद आती हो माँ
पूजा की थाली सजाने से पहले
मन्दिर में दीपक जलाने से पहले
जीवन की रस्मो को निभाने से पहले
याद आती हो माँ

रोली यादव
(बी.ए.–।।)

शायद लोग सही कहते है, अब मैं बूढा होने लगा हूँ .....

खोल के मनचाहे किताब के पन्ने पढ़ते–पढ़ते ही सोने लगा हूँ, शायद लोग सही कहते है, अब मैं बूँढा होने लगा हूँ पहले से फुर्ती नहीं बदन में दो कदम चलने से थकने लगा हूँ, गिनी हुई साँसे है बाकी, एक–एक को खीच के लेने लगा हूँ आँखों से कम हो गया है दिखना, खुद ऊँचा भी अब सुनने लगा हूँ, भूख नहीं लगती अब उतनी जिदां रहने को दाने चुगने लगा हूँ, पहले जिन बातों पर गुस्सा आता था अब उनको नजरअंदाज करने लगा हूँ बड़े–बड़े बच्चों के आगे अपने ही गुस्से से डरने लगा हूँ। शायद लोग सही कहते हैं अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ।

उम्र जो ढ़लने लगी है मेरी, गलतियाँ अपनी गिनने लगा हूँ माँफी तो माँग नहीं सकता पर, उन पर पछतावा करने लगा हूँ मन में जितने उदार भरे थे, आँखों से अब खाली करने लगा हूँ, फिर – फिर जो आँसू आते हैं उन्हें आँखों की खराबी कहने लगा हूँ।

प्यार तो पहले भी करता था सबसे अब जाहिर करने लगा हूँ, वक्त मिले न मिले कहने का इसलिए अब सब कुछ कहने लगा हूँ

सब अपने अब साथ रहे मेरे, ऐसी कामना करने लगा हूँ वक्त मेरे पास जो कम है देख–देख के सबके जी भरने लगा हूँ। जाना तो इक दिन है सबको पर बिस्तर पे पडने से डरने लगा हूँ चलते–चलते चला जाऊँ, बस यही प्रार्थना करने लगा हूँ, शायद लोग सही कहते हैं अब मैं बूढ़ा होने लगा हूँ।

जूही सिंह
(बी.एस.सी. –।)

'' सबसे अच्छी पढ़ाई''

सुरूचि उच्च शिक्षा संस्थान हमारा।
सुन्दर अच्छा प्यारा प्यारा।।
भूल न जाना प्यारे भाई, सबसे अच्छी यहाँ पढ़ाई।।
सड़क जहाँ की शोभा देती, फील्ड जहाँ की दु:ख हर लेती।।
पेड़ जहाँ के अति मन भाते, गर्मी में हम छाया पाते।।
तुमभी जाओं पढ़ने भाई, सबसे अच्छी यहाँ पढ़ाई ।।
बड़े योग्य अध्यापक इसके हैं, वातावरण की कमी नही है।।
सबसे अच्छी यहाँ पढ़ाई, भूल न जाना प्यारे भाई।।

मो0 मुबारक खान

सपने

सपने को साकार किया है
सारे जग से प्यार किया है।

मेहनत से विश्वास जगाया
जीवन का इतिहास जगाया
पत्थर को आकार दिया है
सपनों को साकार किया है।

मुश्किल जब भी दु:ख देती है,
हिम्मत उसको हल करती है।
बंजर को गुलजार किया है,
सपनों को साकार किया है।

मैं हूँ सबकी सहयोगी
सारे जग की मैं अनुरागी
हर दु:ख को साकार किया है
सपनों को साकार किया है।

खुद अपनी पहचान बनाई
शोलों में भी राह बनाई
जीवन का विस्तार किया है।
सपनों को साकार किया है।

पूनम सिंह
बी.ए. –।

छोटी – मामूली बातें

कई बातों को हम महत्वहीन समझकर अक्सर यह कहकर छोड़ देते है कि बस छोटी सी बात है इसके लिए क्या परेशान होना मगर यह हमारे लिए सबसे बुरी और नुकसान देह आदत सिद्ध हो सकती है कई बार यही छोटी बाते भारी नुकसान का कारण बन जाती है हर किसी जीवन में छोटी बातें आती है बहुत लोग उनकी उपेक्षा करते है। उस पर ध्यान नहीं देते ''मामूली बात'' कहकर टाल देते हैं यह मामूली कभी कभी बड़ा कमाल कर दिखाती हैं घाव पर मामूली सी जमीन की मिट्टी लगते रहने से वह नासूर बन जाती है गिटार का एक तार टूटने से सब सुर बेसुरे हो जाते है छोटी सी दर्द निवारक गोली बड़े से बड़े शरीर दर्द को दूर कर देती है एक छोटी सी माचिस की तीली इतनी शक्तिशाली होती है कि यह कुछ भी जलाकर राख सकती है और कहतें हैं की जो कार्य छोटी सी सुई कर सकती है वह तलवार भी नहीं कर सकती इसलिए जो लोग मामूली बात पर भी काफी विचार करते है, छोटी–छोटी चीजों को भी अहमियत देते हैं वे अवश्य सफल होते है इसके विपरीत जो लोग छोटी–छोटी बातों की उपेक्षा कर देते है तनिक सी दिखने वाली बात कई बार जीवन को तबाह करने के लिए काफी होती है तो छोटी सी बात से सीख ले लेने पर जीवन संवर जाता है और इसी छोटी सी बात का ध्यान रखकर कार्य करना ऊँचाइयों पर ले जाने का मार्ग भी बन जाता है इसलिए जीवन में छोटी–छोटी बातों को मामूली समझकर अनदेखा न करें, ''बल्कि इन्हें अहमियत देना सीखें''

राजेश कुमार
(बी.एड–।।। से.)

माँ चन्द्रिका देवी

जो देवी है शक्ति रूप स्थित हम सबमें,
उसे नमन है उसे नमन है उसको बरम्बार नमन है।
शक्ति स्वरूपा नव दुर्गा चंद्रिका देवी माँ,
तम्हे नमन है तुम्हे नमन है तुम को बारम्बार नमन है।।

महिमा अपार है तुम्हारी लोक लोक अम्बे
नाम जमने से नष्ट होती अंधकार है।
चंद्रकांति युक्त कहलाती हो चंद्रिका देवी,
पास में सुशोभित सुग्राम कठवारा है।
देख के अनूप रूप शोक खो गया
कंज के समान खिला ह्रदय हमारा है।
मन्दिर विलोकने को चरण बढ़ाती तीव्र
चूनर चढ़ाती नित्य गोमती की धारा है।

भारतवर्ष के उत्तर प्रदेश प्रांत की राजधानी लखनऊ जिस मर्यादा पुरूषोत्त्म भगवान श्री राम के अनुज वीर वर लक्ष्मण जी ने बसाया था, इस नगरी से सीतापुर–दिल्ली जाने वाले राजमार्ग 24 पर 19 कि.मी. चलने पर ऐतिहासिक स्थल बख्शी का तालाब तथा बख्शी तालाब से बायीं ओर एक मार्ग जाता है (माँ चंद्रिका देवी मार्ग) जिस पर 11 कि.मी. चलने पर माँ चंद्रिका देवी का पौराणिक मन्दिर एवं महीसागर संगम तीर्थ विराजमान है। यहाँ प्रत्येक अमावस्या को मेला लगाता है जिसमें लाखों भक्त माता का पूजन दर्शन करने हेतु आते है मन्दिर के समीप ही तीर्थ मही सागर (सुधन्वा कुंड) है जिसमें भक्त स्नान दान तथा माँ की पूजा दर्शन कर अपने को पुण्य का भागीदार तथा धन्य मानते है।

अमावस्या के दिन तीर्थ सुधन्वा कुंड में स्नान दान व माँ के दर्शन का विशेष फल माना जाता है दैनिक, मासिक, वार्षिक तथा आश्विन तथा चैत्र मास की नवरात्र में माँ की पूजा अराधना होती है।

माँ आदिगंगा गोमती तट पर, चंद्रिका का धाम है
पावन सुधन्वा कुण्ड ऊपर, सिद्धिपीठ ललाम है।
लगता अमावस्या को सदा, मेला यहां अभिराम है।
जिसको बुलाती माँ वही, पहुँचा सहज इस धाम हैं

कुमकुम यादव
(बी.ए. –।।)

किताब

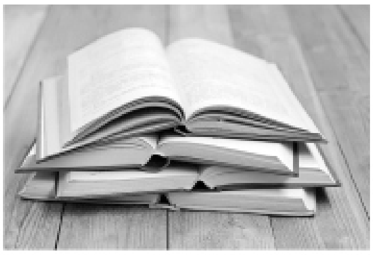

किताबे हमें ज्ञान देती है। वे हमारा मन बहलाती है और अकेलापन को दूर करती है। कहानी की किताबे पढ़कर हम अच्छे से समय व्यतीत कर सकतें है।

स्कूल में शिक्षा के लिए पुस्तकें बहुत जरूरी होती हैं। किताबों के बिना छात्रों की पढ़ाई अधूरी रह जाती है। उन्हें लिखकर अभ्यास करने की आदत न होती जिससे वे लिखने और पढ़ने का काम ठीक से न कर पातें। किताबे न होती तो लिखित परीक्षा भी न होती और विद्यार्थियो के ज्ञान का मूल्यांकन करना संभव न होता।

यदि किताबे न होती तो हमारे पास जीवन की विभिन्न घटनाओं का विवरण लिखना सम्भव न होता। यदि किताबें न होती तो हमे प्राचीन काल की घटनाएँ नहीं जान पातें। हम किताबें से ही प्राचीन काल कि सभी घटनाए पढ़तें हैं और अपना ज्ञान बढाते है।

किताबों के अभाव के कारण हमारे जीवन में कुछ कमी सी महसूस होती है। पुस्तकें हमारी दोस्त के समान होती हैं।

जो हमें सही राह दिखाती है। हम हर चीज के बारे में किताबों से जानकारी प्राप्त कर सकते है। किताबे एक व्यक्ति के विचारो को दूसरो तक पहुचाने का माध्यम होती है।

किताबों के जरिये हम बड़े–बड़े वैज्ञानिकों और दार्शनिकों के विचारों के बारे में जान सकते है। और उनके अनुभवों को पढ़कर लाभ उठा सकते है। इसीलिए किताबें हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है और उनके बिना जीवन असम्भव सा लगता है।

शायरी
किताबें से कभी गुजरो
तो यूं किरदार मिलते हैं।
गए वक्त की ड्योढ़ी में
खड़े कुछ यार मिलते हैं।

रणधीर मौर्य
बी.ए.–II

'जो होता है वह अच्छे के लिए होता है।'

यह कहानी है मिस्टर क्लार्क की। जिन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी की कमाई एक शिप के नौ टिकट खरीदने के लिए लगा दी। वो शिप समुद्र में पहली बार उतरने वाला था। वो यूनाइटेड किंगडम से यूनाइटेड ऑफ अमेरिका को जा रहा था। ये कहानी 1912 की है। जिस दिन वह शिप यानि 10 अप्रैल 1912 को निकलने वाला था उसके ठीक एक दिन पहले मिस्टर क्लार्क के बेटे को एक कुत्ते ने काट लिया। ऐसे में डाक्टर ने उस बच्चे को शिप पर ले जाने की परमिशन नहीं दी। मिस्टर क्लार्क ने सोचा एक तरफ वो शिप है जो निकल जायेगा और दूसरी तरफ मेरा बच्चा जिसे मैं छोड़कर नहीं जा सकता। जिस रोज वह शिप जा रहा था उस रोज मिस्टर क्लार्क आँखे भर कर खड़े थे। शिप जितनी दूर जा रहा था मिस्टर क्लार्क उसे याद कर रहे थे। वो सोच रहे थे कि मैने क्यों अपनी जिन्दगी की सारी कमाई नौन टिकट खरीदने पर लगा दी। दूसरी ओर वो यह कोश भी रहे थे कि अपने बच्चे का ख्याल नहीं रख पायी। कुत्ते ने बच्चे को काट लिया लेकिन वो कुछ भी नहीं कर पाये वो यही सोच रहे थे । ठीक 5 दिन बाद यानि 15 अप्रैल 1912 की सुबह उन्ही का बेटा अखबार लेकर आता है। उसमें लिखा है कि आइसबर्क से टकराने के कारण वो शिप समुन्दर में डूब गया। ये शिप टाइडनिक था। अब मिस्टर क्लार्क ऊपर वाले का शुक्रिया अदा करने के निए उस कुत्ते को ढूँढ़ रहे हैं। कि माला पहनाऊँ उस कुत्ते को बचा लिया उसने आज हम बैठकर इस बात पर अफसोस मना रहे हैं कि हम शिप पर क्यों नहीं जा पाये और अगर चले गये होते तो शायद आज हम यहाँ नहीं होते। ऐसा कई बार होता है। जिन्दगी में जो सोचा है वो होता नहीं है। फिर तकलीफ होती है। देखो लाइफ में हम प्लान तो हम सब कुछ कर सकते हैं पर एक्जक्यूट करने का हक सिर्फ ऊपर वाले को होता है।

कई बार अगर कोई चीज नहीं हुई है तो इसके पीछे एक लाइन है जो माँ बाप ने बचपन से कही है कि ''जो होता है वह अच्छे के लिए होता है।'' ये गलत नहीं कहा है। आजमा कर देखना कभी लाइफ में वो कहते है। कि हर फेस लाइफ का एक डॉट है।' जो उस समय काले धब्बे की तरह दिखाई देता है। लेकिन जैसे ही आप आगे बढ़ते है। तब उस डॉट को जब आज के डॉट से मिलाओगे तो एक तस्वीर बन जाती है जो हम बाद में नजर आती है। अब इससे मेरा ये मतलब नहीं है कि जो होगा अच्छे के लिए हो तो हमें कुछ ना करें। कर्म तो आपको करना पड़ेगा। सफलता तभी आपको मिलेगी अन्यथा नहीं।

रंगीता
बी.ए.–I

सरदार बल्लभ भाई पटेल

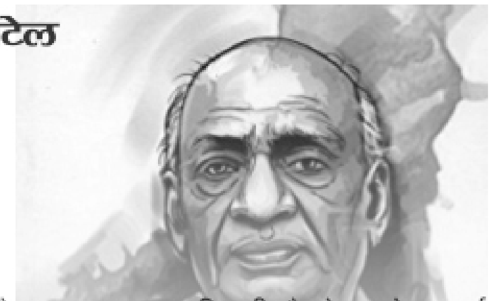

जन्म : 31 अक्टूबर 1875 नडियाद
मृत्यु : 15 दिसम्बर 1950 मुम्बई
शिक्षा : मिडल टेम्पल
पालक : झवेर भाई पटेल लाडबा

सरदार बल्लभ भाई पटेल स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। भारत की आजादी के बाद वे प्रथम गृहमंत्री और उपप्रधानमंत्री बने। बार डोली सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे पटेल को सत्याग्रह की सफलता पर वहाँ की महिलाओं ने सरदार की उपाधि प्रदान की।

जीवन परिचय :

पटेल का जन्म नडियाद गुजरात में एक लेउवा गुर्जर कृषक परिवार में हुआ था वे झवेर भाई पटेल एवं लाडबा देवी की चौथी संतान थे। सोमा भाई, नरसी भाई और विट्टल भाई उनके अग्रेज थे। उनकी शिक्षा मुख्यता स्वाध्याय से ही हुई। लन्दन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गाँधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया।

मुख्य लेख :

भारत का राजनीतिक एक किरण सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही पीवी मेनन के साथ मिलकर कई देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिए कार्य आरम्भ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को समझाया कि उन्हे स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणाम स्वरूप तीन को छोड़कर शेष सभी रजवाणों ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू एवं कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ़ के नवाब के विरूद्ध जब बहुत विरोध हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़ भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। किन्तु नेहरु ने कश्मीर को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक अन्तराष्ट्रीय समस्या है।

बार डोली सत्याग्रह :

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान वर्ष 1928 में गुजरात यह एक प्रमुख किसान आन्दोलन था। जिसका नेतृत्व बल्लभ भाई पटेल ने किया था। उस समय प्रांतीय सरकार ने किसानों के लगान में 22 प्रतिशत तक की वृद्धि कर दी थी। पटेल ने इस लगान वृद्धि का जमकर विरोध किया। सरकार ने इस सत्याग्रह आन्दोलन को कुचलने के लिए कठोर कदम उठाए, पर अतंतः विवश होकर उसे किसानों की मागों को मानना पड़ा। एक न्यायिक अधिकारी बूमफील्ड और एक राजस्व अधिकारी मैक्सेवल ने सम्पूर्ण मामलों की जाँच कर 22 प्रतिशन लगान वृद्धि को गलत ठहराते हुए इसे घटाकर 6.03 प्रतिशत कर दिया।

इस सत्याग्रह आंदोलन के सफल होन के बाद वहाँ की महिलाओं ने बल्लभ भाई को सरदार की उपाधि प्रदान की। किसान संघर्ष एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के अंतसबंधों की व्याख्या बार टोली किसान संघर्ष के संदर्भ में करते हुए गाँधीजी ने कहा कि इस तरह का हर संघर्ष, हर कोशिश हमें स्वराज के करीब पहुँचा रही है और हम सबको स्वराज की मंजिल तक पहुचाने में ये संघर्ष सीधे स्वराज के लिए संघर्ष से कहीं ज्यादा सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

अनुपम मौर्य
बी.ए.–I

दोस्ती

खूबसूरती जिन्दगी में इससे ही आई है
दोस्ती दुनिया की सबसे बड़ी खुदाई है।
बचपन की ताजगी इससे ही आई
मौसम में मस्तानगी इसने ही लाई
उम्र के पड़ावों में इसने गहरी भूमिका निभाई है
सारी चतुराई इसने ही सिखलाई है
दोस्ती दुनिया की सबसे बड़ी खुदाई है।
सपनों को हकीकत की राह इसने ही दिखाई है
हिम्मत इसने हमेशा ही बढ़ाई है
हुनर से पहचान करवाई है
सफर की थकान उसने मिटाई है
दोस्ती दुनिया की सबसे बड़ी खुदाई है।
हर दर्द की होती सुनवाई है
उदासी इसने दूर भगाई, है
रोते हुए चेहरों पे हँसी आई है
भरोसे की ताकत इसने बढ़ाई है
जाति–धर्म, ऊँच –नीच की यहाँ नहीं कोई सुनावाई है
मन्दिर–मस्जिद–गुरूद्वारे–चर्च सबकी छवि इसने
एक ही बनाई हैं
अपनेपन की भावना इसने ही जगाई है
खूबसूरती जिन्दगी में इससे ही आई है
दोस्ती दुनिया की सबसे बड़ी खुदाई है।

स्वाती यादव

गौतम बुद्ध तथा उनकी शिक्षाएँ

छठी शाताब्दी ईसा पूर्व की परिस्थितियों के कारण जिन नवीन धर्मों का उदय हुआ उनमें बौद्ध धर्म सर्वप्रमुख है। गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के प्रवर्तक थे गौतम बुद्ध का जन्म 563 या 566 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी ग्राम के आम्रकुंज में हुआ था इनके पिता कपिलवस्तु के शाक्य गणराज्य के प्रधान शुद्धोधन थे इनकी माता का नाम महामाया था जन्म के सातवें दिन इनकी माता का निधन हो गया। अतः इनकी मौसी महाप्रजापति गौतमी गौतम ने इनका पालन पोषण किया। काल देव तथा ब्राहम्ण कौन्डिन्य ने भविष्यवाणी की थी कि बालक चक्रवर्ती राजा अथवा सन्यासी बनेगा सिद्धार्थ इनके बचपन का नाम था। तथा यह बचपन से ही चिन्तनशील थे। 16 वर्ष की आयु में ही इनका विवाह यशोधरा से हुआ जिससे इनको राहुल नामक पुत्र हुआ। हालांकि इनके पिता नें इनको दु:खों से दूर रखने का प्रयत्न किया था लेकिन एक वृद्ध, एक बीमार, एक मृत्यु, एक प्रसन्न सन्यासी को देखकर मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया

गृहत्याग के बाद बुद्ध 39 वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ ने गृह त्याग किया बौद्ध ग्रन्थों को इस घटना को महा महभिनिख्क्रमण कहा गया है ज्ञान की खोज में चलते हुए वे विभिन्न स्थानी पर गए तथा रूद्रकरामपुत्र जैसे सन्यासियों से मिले इसके पश्चात वक कुरूपेला (बौद्ध गया) पहुंचे तथा निरन्जना नदी के तट पर पांच ब्राह्मण सन्यासियों के साथ तपस्या करने लगे। जातक कथाओं से पता चलता है कि अरूबेला की सेनानी की पुत्री सुजाता द्वारा लायी गयी भोज्य सामाग्री को ग्रहण कर लेने के कारण पांचो ब्राह्मण इनका साथ छोडकर ऋदार्ष पतन (सारनाथ) चले गये।

बुद्ध अरूबेला से गया पहुंचे और वहा एक पीपल के वृक्ष के नीचे समाधि लगायी आठवे दिन वैशाख पूर्णिमा के दिन उन्हे शान (बोद्धि) की प्राप्ति हुई तथा वे बुद्ध (प्रज्ञावान) कहलाए उन्हे तथागत भी कहा गया जिसका अर्थ है सत्य है ज्ञान जिसका बुद्ध का एक नाम सान्य मुनि भी है।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् बौद्ध गया में ही उन्होने दो वनजारो तपस्सु और भलिक को अपना सेवक बना लिया बुद्ध गया से ऋदषि पतन या मृगदाव (सारनाथ) पहुँचे।
जहाँ पहले से ही पाँचों ब्राहम्ण मौजुद थे यही पर बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश इन्हे पाँच ब्राह्मणों को दिया।

इस घटना को धर्मचक्र प्रवर्तक कहा गया। इसके बाद बुद्ध वाराणसी, राजगृह, लुम्बिनी, श्रावस्ती, वैशाली आदि स्थानों पर घुमते हुए अपनी शिक्षाओं का प्रचार प्रसार करते रहे। उन्होने उनके समकालीन महत्वपूर्ण व्यक्तियों को जैसे बिम्बिसार, अजात शत्रु तथा वैशाली के चेतक समेत अनेक व्यापारियों जैसे अनाथापिण्डक आदि को अपनी शिक्षाओं से प्रभावित किया तथा अनके शिक्षा प्राप्त की बुद्ध ने अपने शिक्षाओं के प्रचार प्रसार के लिए संघ का भी निर्माण किया। जिसमें प्रवेश संचालन हेतु किया आदि के लिए स्पष्ट नियम बने थे संघ ने बुद्ध की शिक्षाओं के प्रचार प्रसार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई कौशल नरेश प्रसेनजित कौशाम्बी नेरश उद्यन आदि ने भी बौद्ध धर्म के प्रति सहयोगिता दिखाई बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में आनन्द, उपाली, अभय आदि थे स्त्रियाँ भी थी उनकी

शिष्य बनी जिनमें गौमती, विशाखा, यशोधरा, नन्दा, आम्रपाली आदि थी।

बुद्ध के सबसें अधिक शिष्य कौशल राज्य से ही हुए तथा यही पर अपने धर्म का सबसे अधिक प्रचार प्रसार किया। जीवन के अन्तिम वर्ष बुद्ध ने अपने शिष्य चन्द्र (लोहार अथवा सुनार) के यहाँ पावा पहुँचे तथा उनके यहाँ कुछ भोज्य सामाग्री खाने के बाद अतिसार रोग से पीड़ित हो गये यहाँ से बुद्ध कुशीनगर पहुंचे कुशीनगर में ही उनकी मृत्यु हो गयी जिसये बौद्ध ग्रन्थ को महापरि निर्वाण कहा गया। मृत्यु के पूर्व बुद्ध ने कहा था ''सभी सांधातिक वस्तुआ को विनाश होता है अपनी मुक्ति के लिए उत्साह पूर्वक प्रयास करो'' महापरि निर्वाण शतु के अनुसार बुद्ध के पश्चात् उनकी धातुओं पर मगध,कपिलवस्तु, वैशाली, वेठाद्वीप, अल्कपंथ, पिप्लीवन, पावा, रामगांव, आठ स्थानों पर स्तूप बने।

सोनी गौतम
बी.ए. –I

बढ़ते कदम

दुनिया की सोचकर तुम बढ़ते कदम पीछे हटा लोगे,
अपनी सारी इच्छाओं की यू ही मन में ही दबा लोगे,
बहुत हुयी खामोशी अब, अपने हक के लिए बोला करो,
कुछ करने का जज्बा है तो, उसे फिर किया करो,
सोचते है इतना तो ये सुनहरा वक्त निकल जायेगा,
कुछ कर दिखाने का सपना यू ही अधूरा रह जायेगा,
हर बाधा को पार करके तुम आगे बढ़ा करो,
कुछ करने का जज्बा है, तो उसे फिर किया करो,
ले लो शपथ कि देश पर ऑच न आने दोगे,
हर बढ़ती चिंगारी को पहले ही धमिल कर दोग

वंदना मौर्या
बी.एस.सी–1 समेस्टर

हमारा भारत कैसा है?

हिमालय पर्वत के दक्षिण तथा हिन्द महासगर के उत्तर में स्थित एशिया महाद्वीप का प्रायद्वीप भारत कहा जाता है। इसका विस्तृत भूखण्ड जिसे एक उपमहाद्वीप कहा जाता है। यह लगभग 250 मील लम्बा 2000मील चौड़ा है रूस को छोडकर विस्तार में यह समस्त यूरोप के बराबर है यूनानियों ने इसे इण्डिया कहाहै तथा मध्यकालीन लेखकों ने इसे हिन्द अथवा हिन्दुस्तान के नाम से सम्बोधित किया है

दक्षिण का पठार तथा सुदूर का प्रवेश मिलकर आधुनिक दक्षिण का निर्माण करते है। नर्मदा तथा ताप्ती नदियां विन्धा तथा सतपुड़ा पहाडियाँ और महाकान्तर के वन मिलकर उत्तर भारत को दक्षित भारत से प्रथक करते है दक्षिण भारत में एक सर्वदा भिन्न संस्कृति विकसित हूई जिसे ''द्रविण'' कहा जाता है इस संस्कृति के अवशेष आज भी दक्षिण में विद्यमान है।

प्रकृति ने भारत को एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई प्रदान की है। उत्तर में हिमालय पर्वत एक ऊंची दीवार के समान इसकी रक्षा करता रहा है तथा हिन्द महासागर देश को पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण से घेरे हुए है। इन प्राकृतिक सीमाओं द्वारा भारत अपनी एवं सर्वदा स्वतन्त्र तथा प्रत्येक सम्यता का निर्माण कर सका है भारतीय इतिहास पर यहाँ के भूगोल का गहरा प्रभाव पड़ा है। यहाँ के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अलग कहानी है। एक ओर ऊँचे–2 पर्वत है तो दूसरी ओर नीचे के मैदान है, एक ओर अत्यन्त उपजाऊ प्रदेश है तो दूसरी ओर विशाल रेगिस्तान है। यहाँ उभरे पठार घने बन तथा एकान्त घाटियाँ है। एक शाम कुछ स्थान अत्यन्त उष्ण तथा अत्यन्त शीतल है। ऐसी यूरोप में विषमता कही दिखायी नहीं देती है। भारत का प्रत्येक क्षेत्र भौगोलिक एक विशिष्ट इकाई के रूप में विकसित हुआ है तथा उसने सदियों अपनी विशिष्टता बनाये रखी है।

परन्तु इन अति प्राचीन समय में यहां भिन्न–2 जाति धर्म वेश भाषा तथा आचार–विचार के लोग निवास करते है किसी भी बाहरी पर्यावेक्षक को यहाँ की विभिन्नतायें खटक सकती है।

परन्तु इन बाह्य विभिन्नताओं के मध्य एकता दिखाई देती है जिसकी कोई उपेक्षा नहीं कर सकता फलस्वरूप विभिन्नता में एकता (Unity in diversity) भारतीय संस्कृति की सर्वप्रमुख विशेषता बन गयी है देश की समान प्राकृतिक सीमाओं ने यहाँ के निवासियों के मस्तिष्क में समान मातृभूमि की भावना को जागृत किया है। मौलिक एकता का विचार यहाँ सदैव बना रहा है तथा उसने देश के राजनैतिक आदर्शो को प्रभावित किया। यद्यपि व्यवहार में राजनैतिक सिद्धान्त के रूप में इसे इतिहास के प्रत्येक युग में देखा जा सकता है। सास्कृतिक एकता आधिक सुस्पष्ट रही है। भाषा, साहित्य, सामाजिक तथा धार्मिक आदर्श इस एकता के प्रमुख माध्यम है। भारतीय इतिहास के अति प्राचीन काल से ही हमें इस मौलिक एकता के दर्शन होते है। महाकाव्य तथा पुराणों में इस सम्पूर्ण देश को ''भारत वर्ष'' अर्थात् भरत का देश तथा यहाँ के निवासियों को ''भारती'' (भरत की सन्तान) कहा गया है विष्णु

पुराण में उस एकता की अभिव्यक्ति हूई है ''समुद्ध के उत्तर में तथा (दक्षिण) हिमालय के दक्षिण में जो स्थित वो भारत देश ही तथा वहां की सन्तान 'भारती' है। प्राचीन कवियों, लेखकों तथा विचारको के मस्तिष्क में एकता की यह भावना सदियों पूर्व से ही विद्यमान रही है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में कहा गया कि '' हिमालय से लेकर समुद्र तक हजार योजन विस्तार वाला भाग चक्रवर्ती राजा का शासन क्षेत्र होता है'' यह सार्वभौमि सम्राट की अवधारणा भारतीय सम्राटों को अत्यन्त प्राचीन काल से प्रेरणा देती रही है।

भारतीयों को प्राचीन धार्मिक भावनाओं एवं विश्वासो से भी इस सारभूत एकता का परिचय मिलता है। यहाँ की एकता में सात पवित्र नादियाँ–गंगा, यमुना, गोदाबरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्ध तथा कावेरी सात पर्वत– महेन्द्र, मलय, सहय, शुन्तिमा, ऋक्ष्य, बिन्ध तथा पारियाद तथा सात नगरियाँ–अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काग्ची, अक्ती, पुरी तथा द्वारावती देश को विभिन्न भागों में बसी हुई होने पर भी देश के सभी निवासियों के लिए समान रूप से श्रद्धेय रही है वेद, पुराण, उपनिषद , रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों का सर्वष सम्मान है। तथा शिव विष्णु आदि देवता सर्वष पूँजे जाते हैं यद्यापि यहां अनेक भाषायें है तथापि ये सभी संस्कृत से ही उद्भक्त अथवा प्रभावित रहे है वर्णाश्रम, पुरूषार्थ आदि सभी सामाज के आदर्श रहे है प्राचीन समय में जबकि आवा गमन के साधनों का अभाव था पर्यटक धर्मोपदेशक, तीर्थयात्री, विद्यार्थी आदि इस एकता को स्थापित करने में सहयोग प्रदान करते रहे है। राजपूत अश्वमेध आदि यज्ञों के अनुष्ठान द्वारा चक्रवर्ती पद के आकांक्षी सम्राटों ने सदैव इस भावना को व्यक्त किया है कि भारत का विशाल भूखण्ड एक है।

इस प्रकार विभिन्नता के बीच सार भूत एकता भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता बनी हुई है।

नीरज निषद
बी.ए. –।